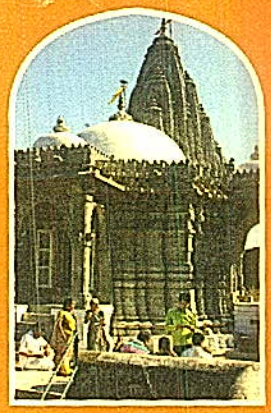

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : 5 ISSUE : 9 MUMBAI, MARCH 2015 PAGES : 36 PRICE : ₹ 25

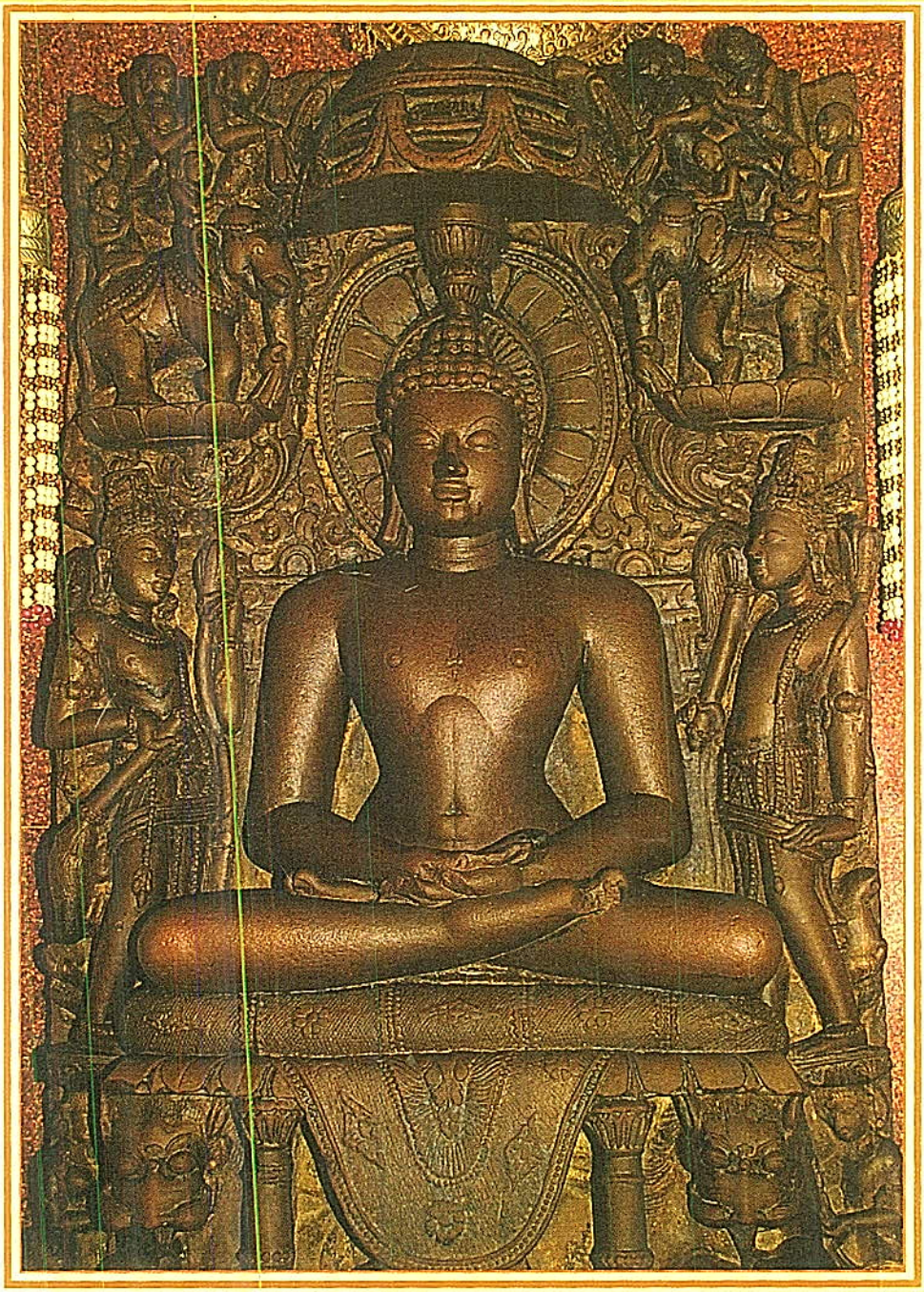

तीर्थंकर श्री 1008 महावीर भगवान, लखनादोन-मध्यप्रदेश को शत्-शत् वन्दन

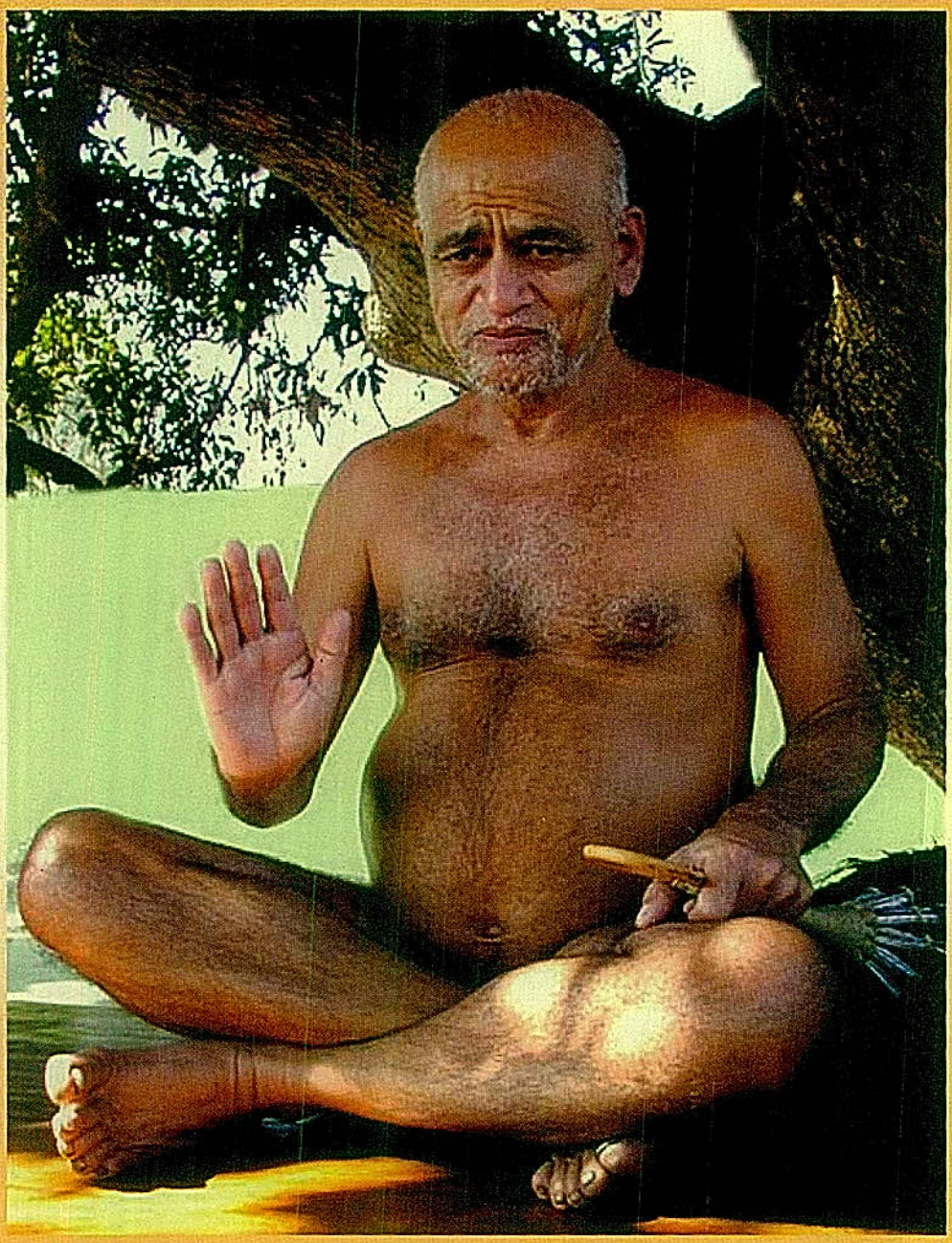

मंत्रों के मेरूदण्ड, द्वादशांग के व्याख्यान आप हैं।
मिटती मानवता के महायान अभियान आप हैं।।
माना कि काल दोष के कारण चौबीसी जन्म नहीं लेती।
लेकिन हम भक्तों को चौबीसी की पहचान आप हैं।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, 250501-5, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

प्रिय भाइयों एवं बहिनों,

सादर जय जिनेन्द्र ।

पूरे देश में जगह-जगह जिन बिम्बों की स्थापना, जिनालयों का भव्य निर्माण एवं पंच कल्याणक प्रतिष्ठायें हो रही हैं महामुनिराज एवं मुनिराजों के मंगल सान्निध्य में। श्रावक अपने अर्जित धन को धर्मक्षेत्रों में यथाशक्ति पुण्यार्जन में लगाकर अपने भाग्य को सराह रहे हैं। सचमुच धन की तीन गतियां ही बताई गई हैं दान- भोग और नाश। और श्रमण परम्परा में उपदेशों के माध्यम से यह कहावत, चर्या के द्वारा हमारे अंदर गहराई से उतरकर हमें धार्मिक अनुष्ठानों से जोड़ती है। धन-सम्पन्नता, भौतिक अनुकूलताएं तो पूर्वोपार्जित पुण्य का प्रतिफल है लेकिन धार्मिक कार्यों में जिनमंदिरों के जीर्णोद्धार में, नवनिर्माण में, धार्मिक शिक्षण के संस्थानों में अपने-अपने द्रव्य के दान का भाव होना- वर्तमान का पुरुषार्थ है। कभी-कभी तो यूं लगता है कि वर्तमान पीढ़ी के संस्कार खान-पान जैन-कुल के अनुकूल बनाये रखने के लिए, समाज के बेटे-बेटियों की शिक्षा के लिए छात्रावास, विद्यालय सभी बड़े शहरों में बनाने से बढ़कर कोई धार्मिक कार्य नहीं है।

कब हम, धार्मिक अनुष्ठानों पर खर्च होने वाली राशि का बड़ा अंश- इन संस्कारों की रक्षा करने वाले शिक्षा मंदिरों के लिए आबंटित कर सकेंगे। क्या ऐसा करने से आज की युवा पीढ़ी लौकिक शिक्षण के साथ-साथ धार्मिक संस्कारों को भी सहज सुरक्षित रख सकेगी?

यदि हमें अपने तीर्थों की रक्षा-सुरक्षा की यथार्थ में चिंता है, यदि हम घटती हुई जैनों की संख्या से चिंतित हैं, यदि हम आने वाले वर्षों में अपने बचे हुए धर्म आयतनों एवं क्षेत्रों को दूसरे के अतिक्रमण से बचाना चाहते हैं तो हमें समाज के बच्चों की सही परिवेश में शिक्षा को सर्वोपरि महत्व देना होगा। जैन समाज के नेताओं को, प्रमुख दानवीरों को, प्रबुद्ध विद्वानों को, प्रमुख प्रतिष्ठाचार्यों को और विशेष रूप से श्रमणाचार्यों, श्रमणों को सम्पूर्ण जैन समाज को इस हेतु प्रेरणा देनी होगी।

इस अभियान की शुरुआत शिक्षा के केन्द्र पूना, मुंबई, बेंगलोर, कोटा, दिल्ली जैसे महानगरों मे जैन-छात्रावासों की स्थापना से होनी चाहिए। जहां वर्तमान लौकिक शिक्षा, कोचिंग के 'हब' के रूप में जाने जाते हैं।

वर्तमान में जैन समाज संक्रमण के दौर से गुजर रहा है और यह संक्रमण सबसे अधिक शिक्षा पद्धति और लौकिक शिक्षण ग्रहण करने के दौरान बच्चों के दिलों-दिमाग को प्रदूषित कर रहा है, क्योंकि हम ही अपने बच्चों को ऊँची-ऊँची डिग्रियां प्राप्त करने हेतु प्रतियोगी बनाकर- कहीं भी रहकर कुछ भी खा-पीकर

तीर्थंकर से तीर्थ की प्रवृत्ति प्रवर्तमान होता है ।

पढ़ने को खुली छूट दे रहे हैं। बचपन के संस्कारों को प्रतिकूलताओं में खो जाने की ढील देकर।

ऐसे माहौल में, उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर ये बच्चे यौवन की दहलीज पर प्रोफेशनल जीवनसाथी का चुनाव करने को बाध्य होते हैं वहां धार्मिक संस्कारों और सामाजिक रीति-रिवाजों की कोई अहमियत नहीं होती। हम यह सब देखकर फूले नहीं समाते कि लड़का-लड़की शादी कर विदेश में या महानगरों में जाब करते हुए बस जाते हैं। या फिर हम ही उनके विवाह संस्कार की विधि- उन होटलों में सम्पन्न कराते हैं जहां कुछ घंटे पहिले तक मांस-शराब की पार्टियां चलती हैं। जो जितना अमीर होगा, वो उतना ही बड़े सितारा होटल में विवाह-फेरे सम्पन्न करायेगा। शुद्ध धार्मिक पाणिग्रहण -विवाह की इस संस्कार विधि का रूपांतरण कब तक हमें जैन बनाये रख सकेगा।

क्यों नहीं हम सोच पाते कि इन सामाजिक कुरीतियों पर अंकुश लगना जरूरी है। क्यों सदाचरण-सम्पन्नता के पैरों तले सिसकने को मजबूर हैं। क्यों समाज के तथाकथित श्रेष्ठीजन इस दिशा में कोई प्रयत्न नहीं कर सकते?

क्या एक वर्ष में पूरे भारतवर्ष में होने वाले भव्य चातुर्मासों एवं पंचकल्याणकों के विज्ञापन पत्रिका खर्च के सिर्फ 20 प्रतिशत राशि से 5 महानगरों में 5 मंजिला जैन छात्रावास नहीं बनाये जा सकते? ... अवश्य बन सकते हैं।

तो आइये हम सब मिलकर अपनी पिछली गलतियों -भूलों को सुधारने का मन बनायें और प्रार्थना करें हमारे मार्गदर्शक, हमारे प्रेरणास्रोत आचार्यों से, मुनिराजों से, आर्यिकाओं से कि हमें नई शक्ति-ऊर्जा दें जिससे जैन समाज के आचार-विचार और धार्मिक संस्कार नई पीढ़ी में भी सुरक्षित रह सकें।

28 फरवरी को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों की बैठक में उपस्थित श्रेष्ठियों के साथ हमें प्रतिभास्थली तिलवाराघाट, जबलपुर संस्थान को देखने-समझने का सुअवसर मिला। मैं अपने सामाजिक जीवन के दोहरे चरित्र की भावना से व्यथित हो गया। सोचने लगा कि काश मेरी बेटियों को भी ऐसे ही प्रतिभास्थली संस्थान में अध्ययन का मौका मिला होता।

मैंने अपने भावों को बिना किसी लाग-लपेट के लिखने का साहस किया है इस आशा और विश्वास के साथ कि इसे पढ़ने के बाद आप मुझे अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत करायेंगे, ताकि मैं अपने संकल्प को गति प्रदान कर सकूँ।

बूंद बूंद के मिलन से,
जल में गति आ जाय,
सरिता बन सागर मिले,
सागर बूंद समाय।

जय जिनेन्द्र,

आपका ही

सुधीर जैन

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती। वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 5 अंक 9 मार्च 2015

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखको के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

तीर्थंकर महावीर के जन्मकल्याणक दिवस की सार्थकता	6
जैनधर्म के पन्द्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान्	8
प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ	10
भगवान महावीर और अहिंसा	16
विश्व शांति के प्रेरक भगवान महावीर और इक्कीसवीं सदी का भारत	18
समत्व साधना के सूत्रधार : भगवान महावीर	19
महाराष्ट्र अंचल की कार्यकारिणी समिति की बैठक शिरपुर (महा.) में सम्पन्न	20
महाराष्ट्र की वर्तमान सरकार का हृदय से आभार एवं अभिनन्दन	21
नित्य देवदर्शन क्यूँ?	23
नेमावर (मध्य प्रदेश) में 18 मंदिरों का शिलान्यास	24
तीर्थक्षेत्र पारसनाथ के लिये करोड़ों की योजनाएँ स्वीकृत	27
हमारे नये बने सदस्य	30

तीर्थ अहिंसा धर्म का आयतन है ।

तीर्थंकर महावीर के जन्मकल्याणक दिवस की सार्थकता

–कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को तीर्थंकर भगवान् महावीर जन्मकल्याणक दिवस आ रहा है। 599 ई.पूर्व वैशाली के कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला की कोख से जन्मे तीर्थंकर भगवान् श्री महावीर स्वामी ने यौवन अवस्था में संसार से विरक्त होकर संन्यास का मार्ग चुना और संसार को भी यह संदेश दिया कि विषय भोगों में फँसने की अपेक्षा उनका दूर से विसर्जन करना ही श्रेष्ठ मार्ग है। धर्म आत्मा से जुड़ा हुआ है, आत्महित के लिए है और आत्मा का हित इसी में है कि वह कर्म बन्धन से विमुक्त हो और परमात्म स्वरूप को प्राप्त करे। परमात्म पद की स्थिति सिद्धावस्था में है। अतः सिद्ध पद प्राप्त करना ही श्रेयस्कर है।

तीर्थंकर भगवान् महावीर ने आत्मा से परमात्मा बनने का मार्ग ही नहीं बताया अपितु संसार में कैसे जीवनयापन करना है; इसका भी उपदेश दिया। उनके उपदेश का लक्ष्य बलपूर्वक उपदेश का पालन करवाना नहीं अपितु सहज स्वाभाविक रूप से धर्माचरण के लिए प्रेरित करना था। इसीलिए उन्होंने श्रमणों (मुनियों) के लिए सम्पूर्ण रूप से अहिंसा, सत्य, अस्तेय (अचौर्य), अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य का उपदेश दिया और गृहस्थों के लिए संकल्पी हिंसा छोड़कर एक देश अहिंसा और हितमित प्रिय वचन व्यवहार रूप सत्य का पालन, न्याय–नीतिपूर्वक व्यापार, खाद्य वस्तुओं में मिलावट न करना, व्यापार में कम–अधिक नहीं तौलना, आवश्यकता से अधिक धनादि वस्तुएं होने पर उनका स्वेच्छा से त्याग (दान) करना, पति–पत्नी के प्रति निष्ठा, आदर एवं विश्वास रखना, "जीव जीवस्य भोजनम्" के स्थान पर प्राणी मात्र की सुरक्षा का भाव रखने वाला 'जीओ और जीने दो' का उपदेश दिया। आज की शांतिप्रिय शासन व्यवस्था एवं सत्यमय न्याय तथा अहिंसक कार्यप्रणाली का मूलाधार तीर्थंकर भगवान् महावीर के उपदेश ही हैं।

भगवान् महावीर के अहिंसक विचारों को प्रतिष्ठा देने के लिए तथा उनकी आवश्यकता मानते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने भगवान् महावीर की विचारधारा के प्रबल समर्थक महात्मा गांधी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर को प्रतिवर्ष अहिंसा दिवस मनाने की घोषणा की है। यह एक तरह से भगवान् महावीर के विचारों के प्रति विश्वस्तर पर निष्ठा की वैश्विक पहल है। आज भगवान् महावीर के द्वारा प्रतिपादित पंचशील के सिद्धान्त राष्ट्रों में परस्पर दुर्भावना को समाप्त करने में समर्थ हो रहे हैं। उनके द्वारा उपदिष्ट अनेकान्तवाद के अनुपम सिद्धान्त ने विरोधी विचारों के प्रति भी समन्वय और संवाद की राह प्रशस्त की है। आज हर संवाद के मंच पर अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्तवाद के प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष स्वर सुनाई देते हैं। जो हिंसक जन हैं वे भी हिंसा छोड़कर राष्ट्रों की मूलधारा में वापिस हो रहे हैं, वापसी चाह रहे हैं; यह तीर्थंकर भगवान् महावीर की अहिंसा की विजय ही है।

आज एक ओर जहाँ जैनेतर समाज भगवान् महावीर की विचारधारा को तेजी से अपना रहा है, वहीं भगवान् महावीर का अनुयायी जैन समाज उनकी विचारधारा से दूर हो रहा है; यह चिन्ता का विषय है। मैं तीर्थंकर भगवान् महावीर के अनुयायियों से पूछना चाहता हूँ कि क्या वे भगवान् महावीर जयंती पर भी भगवान् महावीर की विचारधारा से अपने आप को जोड़ पाते हैं?

आज भगवान् महावीर की उपदेश भाषा अर्द्धमागधी–प्राकृत को जैन लोग भूल गये हैं। वह मात्र विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों की भाषा बन गयी है जिसे पढ़ाने वाले भी धाराप्रवाह रूप से नहीं बोल पाते। वेशभूषा की स्थिति भी यह है कि हमारा कोई प्रतिनिधि 'ड्रेस कोड' नहीं है। हमें महावीर जयंती के दिन भी निवेदन करना पड़ता है कि पुरुष सफेद वस्त्र और महिलायें केसरिया साड़ी पहन कर आयें। भजन की स्थिति तो और भी विचित्र हो गयी है। फिल्मी तर्ज पर बिना विवेक तथाकथित भजन बनाकर उनका गायन किया जाता है। भक्ति–संगीत की शांत सरिता का प्रवाह उसमें दिखाई या सुनाई ही नहीं देता। जिसने राग–द्वेष कामादिक, जीते, सब जग जान लिया (मेरी भावना), ज्ञाता दृष्टा आतमराम, तुमसे लागी लगन पारस प्यारा, मेटो–मेटो जी संकट हमारा, राजा राणा छत्रपति (बारह भावना), दिन–रात मेरे स्वामी मैं भावना ये भाऊँ, देहान्त के समय में तुमको न भूल जाऊँ; के स्वर अब कहाँ सुनाई देते हैं? भोजन में भी अभक्ष्य और अमर्यादित पदार्थों की मिलावट सबकी नजरों में रहती है। फिर कौन कहे कि यह उचित नहीं? नेतृत्व तो यही कहकर चुप करा देता है कि थोड़ा बहुत तो चलता है। जबकि वह भी अच्छी तरह जानते हैं कि जो चल रहा है उसमें थोड़ा नहीं बहुत ज्यादा है। यदि हम भगवान् महावीर जयंती के दिन भी उनकी विचारधारा के अनुरूप भाषा, भूषा, भोजन और

यदि तुम सदा ही गौरवमय बनना चाहते हो तो सबके प्रति क्षमामय व्यवहार करो (तिरुवल्लूर)

भजन का पालन नहीं कर सकते हैं तो स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है कि हम भगवान् महावीर के कैसे अनुयायी हैं? और भगवान् महावीर स्वामी का जन्मकल्याणक दिवस क्यों मना रहे हैं? आज इस पर चिंता और चिंतन करने की आवश्यकता है।

पिछले कुछ वर्षों से भगवान् महावीर जयंती के दिन विवाह के आयोजन किये जाने लगे हैं। जिसने तीस वर्ष की युवावस्था में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विवाह न करके विषयभोगों से विरक्ति का उपदेश दिया हो; उन्हीं के जन्म दिन पर विवाह करना, अभक्ष्य भोजन करना, विषय–भोगपरक गीत–संगीत का गायन करना, सड़कों पर नाचना उचित कैसे कहा जा सकता है? जबकि अगर **हम भगवान् महावीर जयंती मना रहे हैं तो हमें चाहिये कि हम वातावरण को उत्सव का रूप दें। दिन भर ऐसा लगे कि हम महावीरमय हुये हैं। उस दिन शाकाहारी अन्न भी ऐसा ग्रहण करें जो अभक्ष्य और अमर्यादित न हो। हमारे वस्त्रों से झलके कि हम अहिंसक देवता के अनुयायी हैं। उत्सव की भाषा भगवान् महावीर की भाषा बन जाये। तनाव के स्थान पर चैतन्य भाव जागे। दबाव के स्थान पर आत्मविश्वास झलके। उस दिन के हर विचार और हर कार्य में भगवान् महावीर की छाप दिखाई देना चाहिए। ऐसा करके ही हम भगवान् महावीर के सही उत्तराधिकारी सिद्ध होंगे।**

यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि कुछ लोग साधन सम्पन्नता का सहारा लेकर भगवान् महावीर जयंती के दिन भी उनके दो जन्म स्थान मानते हैं या बताने का प्रयास करते हैं। यह हमारी निष्ठा पर प्रश्न चिन्ह है। हम देश–विदेश में भगवान् महावीर जयन्ती मनायें और जन्म स्थान की मान्यता को लेकर प्रतिस्पर्द्धा करें; यह उचित नहीं है। हमें इतिहास मान्य, जनमान्य, सरकार द्वारा मान्य, परम्परागत अहल्ल भूमि वैशाली गणराज्य के कुण्डलपुर (कुण्डग्राम) को ही जन्म स्थान के रूप में मान्यता देना चाहिए। जहाँ आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज, आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज के आशीर्वाद से भव्य भगवान् महावीर जन्मभूमि का विकास हो रहा है। वैशाली और भगवान् महावीर स्वामी के विषय में राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा था कि–

वैशाली जन का प्रतिपालक, गण का आदि विधाता ।
जिसे पूजता विश्व आज, वह प्रजातन्त्र की माता ।।
रुको एक क्षण पथिक यहाँ, मिट्टी को शीश नवाओ ।
राजसिद्धियों की समाधि पर, फूल चढ़ाते जाओ ।।

हमें आज भगवान् महावीर के विचारों को जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। 'जैन फूड' को, 'अहिंसा' को आज विश्वव्यापी पहचान एवं मान्यता मिल रही है; यह गौरव की बात है। हमें लोकतंत्र के प्रतिष्ठापक के रूप में भगवान् महावीर स्वामी को प्रतिष्ठित करना चाहिए। उनके विचार सद्विचार हैं; यह सभी मानते हैं। हमें इस पर गर्व होना चाहिए।

जैन पत्रकारिता के लिए डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती' पुरस्कृत

नई दिल्ली, परम पूज्य आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज एवं एलाचार्य श्री प्रज्ञसागर जी महाराज के सान्निध्य तथा दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री श्री सतेन्द्र जैन के मुख्यातिथ्य में कुन्दकुन्द भारती , नई दिल्ली में आयोजित भव्य समारोह में पार्श्व ज्योति (मासिक) के प्रधान सम्पादक एवं जैन तीर्थवंदना (मासिक) के सम्पादक डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' को प्रखर पत्रकारिता, तथ्य परख लेखन एवं समन्वित चिन्तन से भरपूर सम्पादकीय आलेखों तथा जैन पत्रकारिता में उल्लेखनीय योगदान के लिए अहिंसा इन्टरनेशनल विजयकुमार, प्रबोधकुमार, सुबोधकुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार–2014 (राशि 21,000रु.) से शाल एवं अभिनंदन पत्र भेंट कर पुरस्कृत किया गया।

अहिंसा इन्टरनेशनल पुरस्कारों से इस अवसर पर श्री चन्द्रप्रकाश जैन, अनेकान्त ज्ञानमन्दिर ,बीना, डॉ. श्रेयांसकुमार जैन, लोक कल्याण समिति, नई दिल्ली, पद्मश्री मुजफ्फर हुसैन, प्राचार्य निहालचन्द जैन, श्री प्रदीप जैन (सम्पादक–जैन प्रचारक), श्री सतीश जैन (आकाशवाणी), मास्टर गौरवकुमार, दिल्ली को पुरस्कृत किया गया। समारोह का संचालन श्री ए.के.जैन (महासचिव–अहिंसा इन्टरनेशनल) एवं श्री प्रताप जैन ने किया। इस अवसर पर श्री चक्रेश जैन, नई दिल्ली, प्रो. रमेशचन्द जैन, श्रवणबेलगोला, प्रो. वीरसागर, नई दिल्ली आदि अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष–सवाई सिंघई सुधीर जैन ने डॉ. सुरेन्द्र भारती सहित सभी पुरस्कृत महानुभावों को बधाई प्रेषित की है।

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

जैनधर्म के पन्द्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान्

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'
महामन्त्री–श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्
एल–65, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.) मो. 09826565737

जिन धर्मनाथ भगवन् से उत्तम क्षमादि दशधर्म मिले।
वे धर्मनाथ भगवान् हमारा वरण करें जिनधर्म खिले।।
अधर्म दूर हो जनजन का तम पाप सभी के मिट जाएं,
धर्मनाथ का ध्यान करें और धर्मनाथ सब बन जाएं।।

धातकी खण्ड द्वीप के पूर्व विदेह क्षेत्र में नदी के दक्षिण तट पर वत्स नामक देश की सुसीमा नामक महानगर के राजा दशरथ को एक दिन वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को जब सभी राज्य निवासी महोत्सव मना रहे थे उसी समय चन्द्रग्रहण देखकर मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया और उन्होंने अपने महारथ नामक पुत्र को राज्यभार सौंपकर परिग्रह रहित होकर संयमधारण कर लिया। संयमी अवस्था में 11 अंगों का अध्ययन कर सोलह कारण भावनाओं का चिन्तवन किया; जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें तीर्थंकर प्रकृति का बंध हुआ। सोलहकारण भावनाओं को भाने का यह परिणाम होता ही है। उन्होंने जीवनान्त में समाधि–मरण किया और पुण्य योग से सर्वार्थसिद्धि में अहमिन्द्र पद प्राप्त किया। उनकी आयु 33 सागर थी। शरीर एक हाथ ऊँचा था। वह जीव 499 दिन अर्थात् साढ़े सोलह माह में एक बार कुछ श्वास लेता था। लोक नाड़ी के अंत तक उसके निर्मल अवधिज्ञान का विषय था। उतनी ही दूर तक फलने वाली विक्रिया, तेज और बल रूप सम्पत्ति से वह युक्त था। तीस हजार वर्ष में एक बार वह जीव मानसिक आहार लेता था। प्रवीचार (कामभोग) से वह रहित था। द्रव्य और भाव सम्बन्धी दोनों शुक्ल लेश्यायें उसके थीं। इस प्रकार सर्वार्थसिद्धि में उस जीव ने उत्तम सुखों के साथ अपना सम्पूर्ण जीवनकाल सम्पन्न किया।

इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में रत्नपुर नामका नगर था। उसमें कुरुवंशी काश्यपगोत्री महा तेजस्वी और महालक्ष्मीसम्पन्न महाराज भानु राज्य करते थे। उनकी महादेवी का नाम सुव्रता (सुप्रभा) था। देवों ने रत्नवृष्टि आदि सम्पदाओं के द्वारा उनका सम्मान बढ़ाया था। रानी सुव्रता (सुप्रभा) ने वैशाख शुक्ल अष्टमी (अथवा त्रयोदशी) के दिन रेवती नक्षत्र में प्रातःकाल के समय सोलह स्वप्न देखे। प्रातः जागकर उन्होंने अपने अवधिज्ञानी पति से उन स्वप्नों का फल मालूम किया और फल जानकर ऐसा हर्ष का अनुभव किया मानो पुत्र ही उत्पन्न हो गया हो । उसी समय अन्तिम अनुत्तर विमान सर्वार्थसिद्धि से चयकर पूर्वोक्त वह अहमिन्द्र रानी सुव्रता (सुप्रभा) के गर्भ में अवतीर्ण हुआ। सौधर्म इन्द्रादि ने आकर गर्भ कल्याणक का उत्सव किया । नव माह बीत जाने पर माघ शुक्ल त्रयोदशी के दिन गुरुयोग, पुष्य नक्षत्र में रानी सुव्रता (सुप्रभा) ने अवधि ज्ञानरूपी नेत्रों के धारक पुत्र को उत्पन्न किया। उसी समय इन्द्रों ने सुमेरु पर्वत पर ले जाकर बहुत भारी सुवर्ण–कलशों में भरे हुए क्षीरसागर के जल से उनका अभिषेक कर आभूषण पहिनाये तथा हर्ष से उनका श्री धर्मनाथ नाम रखा। तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान् के बाद जब चार सागर प्रमाण काल बीत चुका और अन्तिम प्रलय का आधा भाग धर्मरहित हो गया तब धर्मनाथ भगवान् का जन्म हुआ था, उनकी आयु भी इसी अन्तराल में शामिल थी। उनकी आयु दस लाख वर्ष की थी, शरीर की कान्ति सुवर्ण के समान थी, शरीर की ऊँचाई एक सौ अस्सी हाथ (45 धनुष) थी। उनका चिह्न वज्रदण्ड था। जब उनके कुमार काल के अढ़ाई लाख वर्ष बीत गये तब उन्हें राज्य का अभ्युदय प्राप्त हुआ था। उन्होंने वैवाहिक सुखोपभोगग किया था।

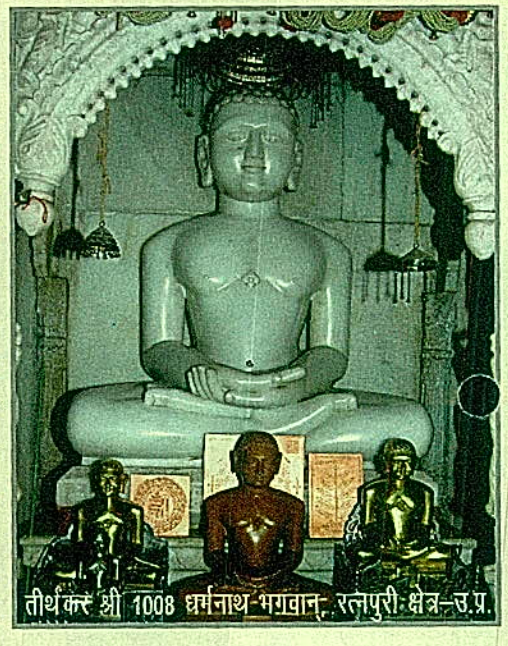
तीर्थंकर श्री 1008 धर्मनाथ भगवान्, रत्नपुरी क्षेत्र–उ.प्र.

राजा श्री धर्मनाथ का पाँच लाख वर्ष प्रमाण राज्यकाल बीत जाने पर किसी एक दिन उल्कापात देखने से उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया। विरक्त होकर वे इस प्रकार चिन्तवन करने लगे–'मेरा यह शरीर कैसे, कहाँ और किससे उत्पन्न हुआ है? किमात्मक है, किसका पात्र है और आगे चलकर क्या होगा; ऐसा विचार न कर मुझ मूर्ख ने इसके साथ चिरकाल तक संगति की। पाप का संचय कर उसके उदय से मैं आज तक दुःख भोगता रहा। ये ज्ञान, दर्शन आदि मेरे गुण हैं; यह मैंने कल्पना भी नहीं की किन्तु इसके विरुद्ध बुद्धि के विपरीत होने से रागादि को अपना गुण मानता रहा।

इस प्रकार भगवान् को स्वयंबुद्ध जानकर लौकान्तिक देव आये और बड़ी भक्ति के साथ इस प्रकार स्तुति करने लगे कि– हे देव! आज आप कृतार्थ–कृतकृत्य हुए । उन्होंने सुधर्म नाम के ज्येष्ठ पुत्र के लिए राज्य दिया, दीक्षा–कल्याणक के

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

समय होने वाले अभिषेक का उत्सव प्राप्त किया, नागदत्ता नामकी पालकी में सवार होकर ज्येष्ठ देवों के साथ रत्नपुर के शालवन के उद्यान में जाकर दधिपर्ण वृक्ष के नीचे दो दिन के उपवास का नियम नियम लिया और माघ शुक्ल त्रयोदशी के दिन अपरान्ह (सायंकाल) के समय पुष्य नक्षत्र में एक हजार राजाओं के साथ मोक्ष प्राप्त कराने वाली जिन--दीक्षा धारण कर ली। दीक्षा लेते ही उन्हें मनःपर्यय ज्ञान उत्पन्न हो गया। वे दूसरे दिन आहार लेने के लिए पताकाओं से सजी हुई पाटलिपुत्र नामक नगरी में गये। वहाँ सुवर्ण के समान कान्तिवाले धन्यषेण राजा ने उन उत्तम पात्र के लिए नवधाभक्ति पूर्वक दान देकर पंचाश्चर्य प्राप्त किये। तदनन्तर छद्मस्थ अवस्था का एक वर्ष बीत जाने पर उन्होंने रत्नपुर के शालवन में सप्तच्छद वृक्ष के नीचे दो दिन के उपवास का नियम लेकर योग धारण किया और पौष शुक्ल पूर्णिमा के दिन अपरान्ह (सायंकाल) के समय पुष्य नक्षत्र में केवलज्ञान प्राप्त किया। देवों ने चतुर्थ केवलज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाकर उनकी उत्तम पूजा की ।

केवलज्ञान होने के उपरान्त सौधर्मइन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने समवशरण की रचना की। समवशरण के मध्य अन्तरिक्ष में विराजमान तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान् की दिव्यध्वनि से प्राणियों ने धर्म के स्वरूप, दान की महिमा तथा आत्मोद्धार आदि का मार्ग जाना।

उनके इस पाँच योजन विस्तृत बारह सभाओं से युक्त समवशरण में 911 पूर्वधारी, 40,700 शिक्षक, 3,603 अवधिज्ञानी, 4,500 केवलज्ञानी, 7,000 विक्रियाऋद्धिधारक, 4,500 मनःपर्ययज्ञानी, 2,800 वादी; इस तरह 64,000 मुनि तीर्थंकर भगवान् की स्तुति करते थे। सुव्रता सहित 62,400 आर्यिकाएं थीं। 2,00,000 श्रावक तथा, 4,00,000 श्रविकाएं थीं। मुख्य श्रोता 'कृष्ण पुंडरीक' (सत्यदत्त) थे। उनके मुख्य गणधर सेन (अरिष्टसेन) थे। कुल गणधर 43 थे। असंख्यात देव–देवियां और संख्यात तिर्यंच उनके समवशरण में थे। उनका केवल्यकाल 2,49,999 वर्ष का था। तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान् के तीर्थ में 'सुदर्शन' नामक बलभद्र और 'पुरुषसिंह' नामक नारायण हुए थे।

धर्मोपदेश पूर्वक विहार करते हुए तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान् अंत में सम्मेदशिखर पहुँचे; वहाँ उन्होंने एक माह का योग निरोध कर 809 मुनियों के साथ प्रतिमायोग धारण किया। अनन्तर ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी (अथवा चतुर्थी) के दिन रात्रि के अंत भाग में सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाती और व्युपरतक्रिया निवर्ती नामक शुक्ल ध्यान को पूर्ण कर प्रातः पुष्य नक्षत्र में खड्गासन से निर्वाण को प्राप्त किया। उनके निर्वाण के साथ मुक्त हुए जीवों की संख्या 801 थी। सौधर्म इन्द्रादि देवों ने आकर भगवान् का निर्वाण कल्याणक मनाया और अग्निकुमार देवों ने केश और नख के साथ मायामयी शरीर का निर्माण कर अग्निसंस्कार के साथ अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न की।

तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान् ने धर्म के अनेक रूपों की प्ररूपणा की और कहा कि आत्मधर्म सर्वोपरि है। बिना आत्मा को केन्द्र बनाये किसी भी धर्मकार्य की सार्थकता सिद्ध नहीं होगी। धर्म मार्ग में प्रवेश के लिए अपने न्यायोपार्जित धन का निवेश करना होता है। यही दान कहलाता है। इससे स्वपरहित होता है। दान में विधि, द्रव्य, दाता और पात्र की विशेषता से विशेषता आती है। दानीजनों को यह विशेष ध्यान रखना चाहिए। दान से सुख की प्राप्ति होती है। दान आत्महित में साधक है। हमें दान धर्म की प्ररूपणा के लिए भी धर्मनाथ तीर्थंकर के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। मेरी भावना कहती है कि–

दान करो तो मान घटेगा और परिग्रह होगा कम ।
दान तीर्थ से उपकृत होंगे, याचक होंगे नर कुछ कम ।।
दान प्रतिष्ठा होगी जग में, सबमें गुण की आन बढ़ेगी ।
धर्मनाथ का धर्म बढ़ेगा, सारी जगती दान करेगी ।।

तीर्थंकर श्री धर्मनाथ की विशेषताएं इस प्रकार थीं–

- वे अत्यन्त भद्र प्रकृति के थे।
- वे बहुदानी थे। उनके दिए ज्ञान से जगत् में अज्ञान मिटा।
- वे 1008 सुलक्षणों से युक्त थे।
- वे महान् थे, श्रेष्ठ थे,
- वे उत्तम परोपकारी करयुक्त, उत्तम शब्द युक्त अर्थात् मधुरभाषी थे।
- वे दुर्जनों का निग्रह नहीं करते थे अपितु दुर्जन ही उन्हें देखकर अपनी दुष्प्रवृत्तियों का निग्रह कर सज्जन बन जाते थे।
- वे सज्जनों का अनुग्रह करते थे।
- वे द्वेषमय प्रवृत्ति नहीं करने वाले गुणों के भण्डार थे।
- वे प्रजापालक थे। प्रजा के लिए पूज्य थे।
- वे समस्त संसार में कीर्ति के धारक थे।
- वे कर्मरूपी शत्रुओं को नष्टकर तीर्थंकर बने थे।
- वे संसार के समस्त सुखों से सम्पन्न होने पर भी विरक्त हुए।
- वे सिद्ध गुणों से सम्पन्न थे।

चार घातिया कर्म नष्ट कर, पाया जिन केवलज्ञान ।
चार अघातिया कर्म नष्ट कर, बने सिद्ध भगवान् ।।
श्रेष्ठ धर्म का शासन जिनका, जिनशासन कहलाया ।
पूजा कर जगती ने जय की, धर्मनाथ बतलाया ।।
आओ, उनको नमन करें हम, आत्मशान्ति को पायें ।
धर्मनाथ भगवान् तुम्हीं हो, पूज–पूज सुख पायें ।।

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती । वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ
शिक्षा के साथ-साथ चलें संस्कारों की ओर

भारत के प्राचीन दिगम्बर जैन आचार्य परम्परा के 20वें शतक के प्रभावी उद्धारक प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के आधुनिक काल के घोर पुनरुज्जीवक, लौकिक तथा धार्मिक शिक्षा का समन्वय करके चरित्र निर्माण व संवर्द्धन को विशेष महत्व देने वाले ज्येष्ठ मार्गदर्शक ज्ञान साधना वाले प्रभावी उपदेशक स्वर्गीय परमपूज्य आचार्य श्री समंतभद्रजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं मध्यप्रदेश में अनेक गुरुकुल संस्थाओं की स्थापना करके और विविध विधायक उपक्रमों का अवलंबन लेकर समाज में अच्छी सांस्कृतिक क्रांति पैदा की, जिससे भावीकाल में सामाजिक प्रगति का अच्छा कार्य हुआ। उन्होंने समाज को नई दिशा दी। बाहुबली ब्रह्मचर्याश्रम, गुरुकुल, महावीर ब्रह्मचर्याश्रम कारंजा, श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम एलोरा, पार्श्वनाथ जैन गुरुकुल खुरई (म.प्र.), पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल स्तवनिधि, भरतेश गुरुकुल बेल्लदबागेवाड़ी, बेलगांव (कर्नाटक), श्री नवागढ़ (उखलदजी) क्षेत्र परभणी आदि स्थानों पर दिगम्बर जैन गुरुकुल एवं ब्रह्मचर्याश्रम स्थापित किये जहां आज भी हजारों विद्यार्थी इन गुरुकुलों में रहकर लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक संस्कारों से पल्लवित एवं पुष्पवित हो रहे हैं। इन गुरुकुलों के अनेक विद्यार्थी देश विदेश में अच्छे-अच्छे पदों पर कार्य कर रहे हैं। आज भी उनमें गुरुकुल के संस्कार निहीत हैं।

गुरुदेव ने गुरुकुल जीवन के अनुभवों के आधार पंच सूत्री बनाये थे। प्रेम, ज्ञान, शील व्यवस्था और सेवा। इन पांचों संस्कारों का उसमें अंतर्भाव था। गुरुकुल शिक्षण परंपरा के कारण ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म, नैतिक मूल्य कला, संस्कृति, व्यापार आदि अनेकों क्षेत्रों में हमारा देश सदैव अग्रणी रहा है। उसी गुरुकुल शिक्षण परंपरा का पोषक है **'प्रतिभास्थली'**। प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल से संचालित कन्या आवासीय विद्यालय है **जिसकी स्थापना ज्ञान दर्शन-चरित्र के नायक परमपूज्य संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से उनके पावन सान्निध्य में 2005 में हुआ है।**

प्रतिभास्थली न्यास के तत्वावधान में प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ, जबलपुर कन्या शिक्षण संस्थान के कार्य का शुभारंभ हुआ है। ज्ञान एवं संस्कारों सहित शिक्षा का लक्ष्य मात्र जीवन निर्वाह नहीं अपितु व्यक्तित्व निर्माण है। ऐसे संकल्प की पूति हेतु आचार्यश्री द्वारा प्रतिभास्थली की बाल ब्रह्मचारिणी विदुषी दीदियों द्वारा कुशल संचालन हो रहा है।

प्रतिभास्थली जबलपुर का दिग्दर्शन भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों एवं गणमान्य सदस्यों ने भी किया। उनके विचारों को आगे के पृष्ठों में दर्शाया गया है। विद्यापीठ के भव्य भवन, उपलब्ध शैक्षणिक सुविधाएं एवं संस्कारों की सरिता, हमारी मौ तैयारियों की सफलता एवं समाज से अपेक्षित सहयोग की पुष्टता का प्रतीक है।

29 एकड़ में फैले इस प्रतिभास्थली में समाज के सर्वहारा वर्ग की प्रतिभास्थली कन्याओं का योग्यतानुसार चयन कर उन्हें वांछित आर्थिक प्रबंधन उपलब्ध कराकर उनकी प्रतिभा के उन्नयन में हमारी सभी दीदियां प्रयत्नशील रहती हैं।

प्रवेश द्वार से 10 कदम चलने पर करीब 1200 गायों की एक गौशाला का निर्माण हुआ है और आगे बढ़ने पर गुरुकुल शिक्षा पद्धति से संचालित कन्या आवासीय विद्यालय जहाँ वर्तमान में करीब 650 कन्याएं शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों से प्रशिक्षित की जा रही हैं। साफ-सुथरी आवासीय व्यवस्था, शुद्ध सात्विक पौष्टिक आहार व्यवस्था। सुरक्षित एवं सुरम्य प्राकृतिक वातावरण, सर्व सुविधायुक्त छात्रावास, खेलकूद के विशाल मैदान, मनोरम उद्यान, विशाल समृद्ध पुस्तकालय, स्वास्थ्य परी की व्यवस्था, कम्प्यूटर प्रयोगशालाएं, विज्ञान, गणित प्रयोगशाला अपने आप में अद्भुत है। हमें यह बताया गया कि इसी प्रकार से प्रतिभास्थली का संचालन आचार्यश्री की प्रेरणा से चन्द्रगिरि (डोंगरगढ़) छत्तीसगढ़ एवं रामटेक (नागपुर) महाराष्ट्र में भी संचालित है। इन तीनों प्रतिभास्थलियों को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट से 5.50 - 5.50 लाख रुपये की सहयोग राशि प्रतिभावान गरीब तपके की कन्याओं को फीस आदि के खर्च हेतु प्रतिभास्थली को दान स्वरूप प्रदान किये गये हैं। प्रतिभास्थली न्यास को आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत आयकर से छूट का प्रमाण पत्र भी प्राप्त है। पूज्य गुरुवर, संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज को कोटि-कोटि नमन्, वंदन्, जिन्होंने आने वाली पीढ़ियों को सुसंस्कारित करने हेतु इन प्रतिभास्थलियों के निर्माण हेतु अपना मंगल आशीर्वाद दिया है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार इन प्रतिभास्थलियों की दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति होती रहे, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य गुरुवर के चरणों में बारम्बार नमोस्तु।

ज्ञान एक ऐसा धन है, जो मन को भी अपने वश में कर लेता है।

प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ, जबलपुर की झलकियां

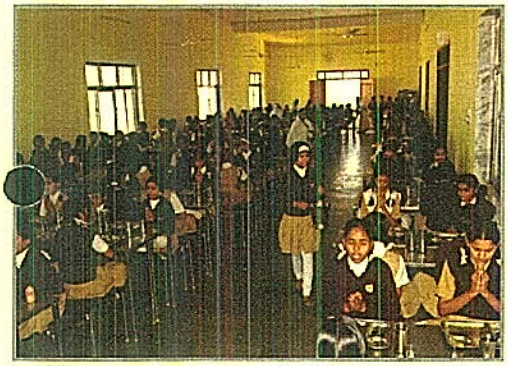

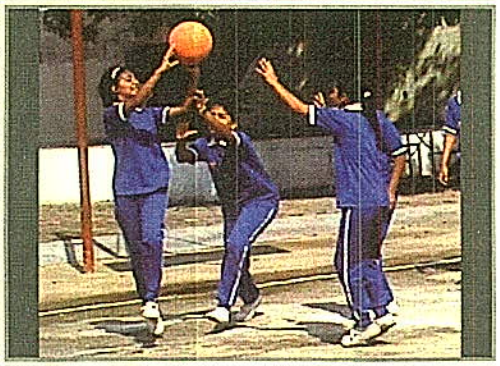

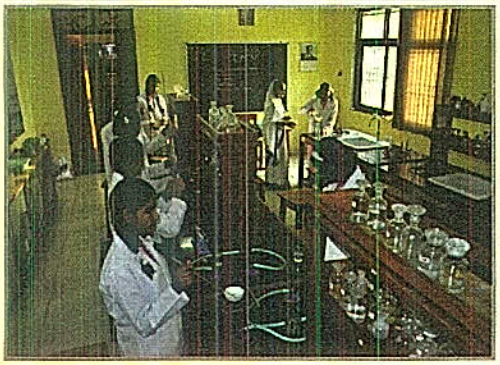

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

अतिशयक्षेत्र मढ़ियाजी, जबलपुर दौरे की झलकियां

धम्मो दयाविसुद्धो (आ.कुन्द-कुन्द : बोधपाहुड, गा.25) । अर्थ- शुद्ध भाव से युक्त दयाधर्म हैं।

प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ अवलोकन के बाद विभिन्न लोगों के उद्गार

दिनांक 28 फरवरी, 2015 को संस्कारधानी नगरी जबलपुर में तिलवाराघाट स्थित प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ का करीब 3.00 बजे सभी लोगों के साथ अवलोकन किया। अवलोकन करने के बाद उनकी व्यवस्था, बच्चों को पढ़ाने का तरीका, भारतीय संस्कृति की शिक्षा अद्भुत लगी और मैंने सोचा कि बड़े-बड़े इंजीनियर मशीन बनाते हैं लेकिन यहां पर मशीन बनाने वाली मशीन बनाई जाती है। बच्चियों के प्रति एवं समाज के प्रति वहाँ की दीदियों का समर्पण काफी सराहनीय था। बच्चियों की देख-रेख और उनको शिक्षा देने का काम, उनकी प्रतिभाओं को निखारना, उनका उज्ज्वल भविष्य बनाना अति सराहनीय था। वहां के व्यवस्थापकों की व्यवस्था अति उत्तम चल रही है। प्रांगण में विशाल मंदिर है। चतुर्थ कालीन प्रतिमा अपने आपमें अद्भुत है। वहाँ पर एक गोशाला है जिसका जीवदया के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान है। बच्चियों के शुद्ध सात्विक भोजन, खेलकूद, शयनकक्ष एवं साफ-सफाई की व्यवस्था अतिप्रशंसनीय / सराहनीय और उत्कृष्ट लगी।

- खुशाल जैन 'सी.ए.' / मंत्री

गुरुकुल पद्धति पर आधारित प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ संस्कारों के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा का अद्भुत समन्वय है। उच्च शिक्षित बाल ब्रह्मचारिणी दीदी जी के द्वारा सेवा की भावना से अध्यापन का कार्य कराया जा रहा है। श्रद्धेय ब्रह्मचारिणी बहिनों का समर्पण वंदनीय है। ये भारतवर्ष का प्रथम संस्कारों को केन्द्रित कर शिक्षा का विशाल केन्द्र है। आचार्यश्री विद्यासागरजी महामुनिराज की महान कृपा है जो उनके शुभाशीष से अनुपमेय शिक्षण संस्थान की सौगात जैन समाज को मिली। जय जय गुरुदेव दयोदय की भूमि अहिंसा करुणा दया की जीवंत मिसाल है जहाँ हजारों-हजार पशु जीवन दान पा चुके हों, वो जगह तीर्थ से कम नहीं है।

- शरद जैन, भोपाल/मंत्री

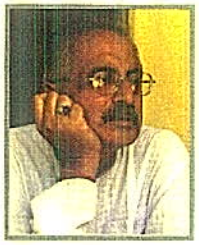

जबलपुर स्थित प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ को देखकर मन गदगद हो गया। वहाँ कर्तव्य पथ पर आरूढ़ ब्र0 दीदीयों द्वारा जिस आत्मीयता से संस्था के बारे में जानकारियां दी गईं वो आश्चर्यचकित करने वाली है। ऐसा समर्पण का भाव आज के आधुनिक युग में दुर्लभ है। मंत्रमुग्ध होकर उनकी बातें सुनता रहा। वर्षों बाद ऐसा लगा कि वीर शासन में दृढ़ता आ रही है। सुखद परिवर्तन हो रहा है। अठारहवीं सदी के अन्त और उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ में जैन जागृति और जिनवाणी के प्रचार–प्रसार की जो लहर बही थी, कुछ वैसी ही अनहोनी घट रही है। शरीर रोमांचित हो गया तथा प्रतिभास्थली के प्रेरणाश्रोत परम् पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रति असीम श्रद्धा एवं कृतज्ञता के भाव से आंखें नम हो गई।

जबलपुर के आयोजित भारतवर्षीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी की बैठक में 28 फरवरी 2015 को जाने का सुअवसर मिला। तीर्थ क्षेत्र कमेटी के यशस्वी अध्यक्ष श्री सुधीर जैन (कटनी) के आग्रह निमित्त एवं स्वनियति से अन्य सदस्यों के साथ प्रतिभास्थली के विशाल परिसर में जाकर और वहाँ की सुंदर व्यवस्था देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। परम पू0 आचार्य श्री की प्रेरणा से वर्तमान में जबलपुर (मध्य प्रदेश) के अतिरिक्त डूँगरगढ़ (छत्तीसगढ़) एवं रामटेक (महाराष्ट्र) तीन स्थानों पर प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ संचालित है। जहाँ लगभग 200 दीदीयाँ, जो स्वयं धर्मानुरागी प्रतिमाधारी हैं एवं अनेक उच्च आधुनिक विषयों में पारंगत है बिना किसी प्रलोभन के निःस्वार्थ भाव से सेवारत हैं। जैन धर्मानुसार अध्यापनरत कन्याओं को स्वस्थ शिक्षा देकर सात्विक प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकें, यही उनकी भावना है। इसी कारण से प्रतिभास्थली में शिक्षा प्राप्त कर रही कन्यायें विविध कलाओं में निपुण होकर हमेशा उच्च अंकों से उत्तीर्ण होकर देश के कोने–कोने में उच्च पदों पर कार्यरत हैं।

हम सोचने लगे कि हमारे देश में हजारों शिक्षण संस्थाएं हैं, जिनमें कुछ की इमारतें और परिसर प्रतिभा स्थली से बेहतर हो सकती है। पर क्या ब्र0 दीदीयों के समान एक भी समर्पित व्यक्तित्व उनके पास है और जहाँ लगभग दो सौ दीदीयाँ हो उस संस्था को अद्भूत और विलक्षण ही कहा जा सकता है। हम जानते हैं कि आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व 18 वीं सदी के अन्त एवं 19वीं सदी के प्रारंभ में कुछ ऐसा ही चमत्कार घटित हुआ था। जिनवाणी एवं जिनधर्म के प्रचार प्रसार के लिए अनेक महानुभाओं ने अपना सर्वस्व न्योच्छावर कर दिया था। हमारा परिवार भी इससे अछूता नहीं था। प्रपितामह प्रभुदास जी ने अत्यन्त साधारण आर्थिक स्थिति होते हुए भी पाँच कल्याणक तीर्थों की पुर्नस्थापना का नियम लेकर भदैनी, चन्द्रावती कौशाम्बी आदि स्थानों या मन्दिर धर्मशाला का निर्माण कराया था। पितामह देव कुमार जी ने 18 वर्ष की उम्र में आजीवन ब्रह्मचर्य का नियम लेकर दूर दक्षिण जाकर शास्त्रों के उद्धार का बीड़ा उठाया एवं जैन सिद्धांत भवन आरा की स्थापना की। साथ ही साथ उन्होंने श्री स्याद्वाद महाविद्यालय काशी के लिए अपनी गंगा तट पर विशाल हवेली विद्यालय को सुपुर्द कर उसकी व्यवस्था संभाली। मात्र 31 वर्ष की अल्प आयु में मृत्यु के पूर्व द्रव्यसंग्रह आदि अनेक ग्रंथों का अंग्रेजी में अनुवाद कर प्रकाशित करवाया। उनके लघु भ्राता की पत्नी माँश्री चन्दाबाई जी ने 12 वर्ष की उम्र में विधवा होने पर आजीवन विधवाओं एवं अशक्त महिलाओं की सेवा का प्रण लिया। उनके द्वारा 1921 में स्थापित जैन बाला विश्राम, आरा में हजारों जैन महिलाओं ने शिक्षा ग्रहण किया। पितामह निर्मल कुमार जी एवं पिता सुबोध कुमार जैन जी ने भी धार्मिक मान्यता के अनुसार अनेकों विद्यालय, महाविद्यालय एवं मूक वधिर एवं नेत्रविहीन, निशक्तः बालकों के लिए शिक्षा के उचित प्रबंध किए। सभी सस्थाएं अभी कार्यरत है। पर आज हम उनके संस्थापकों को स्मरण करते हैं इसलिए नहीं कि उन्होंने विपुल धनराशि व्यय की बल्कि इसलिए कि वे वीर शासन के प्रति, जिनवाणी के प्रति समर्पित थें।

समर्पण का भाव स्वयं के उपर होता है। बाधाएं आधारहीन हो जाती है। दुःख–दर्द गौण हो जाता है और मात्र लक्ष्य सर्वोपरि होता है। वर्तमान समय में इस समर्पण की भावना का अभाव मन को विचलित कर देता है तथा भविष्य के प्रति चिंतित कर देता है।

हम स्वयं अनेकों शैक्षणिक एंव धार्मिक जैन संस्थाओं में से जुड़ें हैं पर विडंबना है कि प्रायः सभी संस्थाओं में कर्तव्य–पालन मात्र औपचारिकता रह गई है। बहुत लंबे समय के पश्चात् जो समर्पण के भाव हमें प्रतिभास्थली पर इन्द्रधनुषी रंगों में परिलक्षित हुआ उसे देखकर भविष्य के प्रति हम बहुत आशान्वित हैं। मन को बहुत शान्ति मिली है। हम सोचने लगे हैं कि जब शिक्षा के क्षेत्र में हमारे परिवार की माश्री चन्दाबाई जी के समर्पण की कीर्ति पूरे देश को संदेश दे

दान, पूजा, तीर्थाटन आदि यदि सम्यग्ज्ञान से सुशोभित है तो वे मुक्ति के कारण हैं (उत्तर पुराण)

सकती है एवं हमारे परिवार को युगों तक यशस्वी बना सकती है तो ज्ञानस्थली में 200 ब्र0 दीदीयों का समर्पण पूरे देश एवं सम्पूर्ण जैन समाज को इतना गौरव दे सकता है, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती है।

पू0 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का प्रतिभास्थल का प्रवास, उनकी दिनचर्या, प्रवचन स्थल, छात्राओं को सम्बोधन, वहाँ सभी के दिल दिमाग पर बसा– छाया हुआ है। ऐसा मालूम पड़ता है, कि मानो वहाँ के कण–कण में आचार्य श्री का आर्शीवाद विद्यमान है। वहाँ की खिलखिलाती छात्राओं एवं दीदीयों के चमकते प्रसन्न चेहरों के पीछे भी आचार्य श्री की वात्सल्यमयी मुस्कान दृष्टिगोचर होती है।

हम दिल पर हाथ रखकर सोचने पर पाते हैं, कि चाहे शिक्षायतन हो या धर्मायतन, वर्तमान में एक भी संस्था देश में प्रतिभास्थली के समान नजर नहीं आती, जहाँ ह्रदय हो, समर्पण हो, निष्ठा हो संस्था के प्रति, धर्म के प्रति, गुरू के प्रति और इन सब के लिए पू0 आचार्य श्री द्वारा दी गई प्रेरणा का जितना उपकार माने वह कम होगा। उन्होंने इस असंभव को संभव बनाकर चतुर्विध संघ को एक नई दिशा दिखाई है, जो सबके लिए मंगलमय होगी।

अजय कुमार जैन, आरा

अध्यक्ष / श्री सम्मेद शिखर दि0 जैन बीसपंथी कोठी, मधुवन

दिनांक 1 मार्च, 2015 को श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट की सम्पन्न बैठक के पश्चात ज्ञानोदय विद्यापीठ प्रतिभास्थली के भ्रमण का सुअवसर प्राप्त हुआ। जैसे ही वहाँ पहुंचे प्रवेश द्वार से अंदर होते ही गौशाला को देखते हुए आगे बढ़े। वहाँ की ऊर्जामयी तरंगों ने मन को झंझोर दिया। वहाँ के आयोजकों ने एवं दीदियों ने हमारे पूरे ग्रुप के साथ रहकर सम्पूर्ण परिभ्रमण कराया एवं वहाँ की गतिविधियों से साक्षात्कार करवाया। विश्वास नहीं हुआ कि जाग्रत अवस्था में था या स्वप्निल अवस्था में, कि आज के इस भौतिकवादी युग में इस प्रकार का शिक्षण संस्थान हो सकता है जिसमें भारतवर्ष की प्राचीन शैक्षणिक शैली का अवलोकन हो जाए। वहाँ पर शिक्षण के दौरान त[illegible] मन, वचन, धन, वन, वतन एवं चेतन को विचारों में रखकर आज के रहन-सहन की सभी विधाओं पर पूरा ध्यान रखा जाता है एवं लौकिक शिक्षा के साथ-साथ जीवनपर्यंत काम आने वाली सभी कलाओं का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

प्रत्येक 20 छात्रा पर एक दीदी जो उच्च शिक्षा प्राप्त है, उसका मार्गदर्शन चौबीसों घंटे प्राप्त होना, कोई छात्रा पढ़ाई में कमजोर रह गई है तो उसको अतिरिक्त क्लासें देना, किसी छात्रा के बीमार हो जाने पर उसकी विशेष सेवा करना ऐसा समर्पणभाव किसी अन्य शैक्षणिक संस्थान में देखने को नहीं मिला।

मैं परमपिता परमेश्वर से मंगल कामना करता हूँ कि यह संस्थान दिनों दिन और भी प्रगति के पायदान ग्रहण करे।

-छीतरमल जैन पाटनी, हजारीबाग

दिनांक 01.03.2015 को पिसनहारी मढ़िया जी में आहूत तीर्थयात्रा एवम् शाश्वत ट्रस्ट की बैठक की समाप्ति के बाद जबलपुर में आचार्य 108 श्री विद्यासागर की प्रेरणा से निर्मित गौशाला एवं सी0 बी0 एस0 सी0 से मान्यता प्राप्त समाज की लड़कियों के षिक्षा संस्थान का अवलोकन श्री सुधीर जैन जी अध्यक्ष एवं अन्य साथियों के साथ भ्रमण करने का अवसर मिला वहाँ पर संयम व्रत द्वारा अंगीकार करने वाली ब्रह्मचारिणी बहनों द्वारा, निःस्वार्थ सेवाभाव से लौकिक एवम् जीवन दायिनी षिक्षा का कार्य अनवरत किया जा रहा है। जो कि अपने आप में एक अनूठा कार्य है अवगत कराया गया कि संस्थान से बच्चे IAS, IPS, IRS आदि में अच्छे पदों पर कार्यरत है। यह संस्था एवम् कार्यरत सभी बहनें /कार्यकर्ता/ धन्यवाद के पात्र है। मैं अन्तर्मन से सभी के सुखी जीवन एवम् दीर्घायु कीए श्री भगवान महावीर स्वामी से कामना करता हूँ तथा संस्था भी इसी तरह दिन दुगुनी रात चौगुनी उन्नति करें।

जम्बू प्रसाद जैन

कोषाध्यक्ष–श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट

मुझे तिलवाराघाट (जबलपुर) प्रतिभास्थली संस्थान देखने का प्रथम अवसर था। जिस रूप में देखा मेरी कल्पना से परे था। 700 से अधिक प्रतिभास्थली बेटियां, छात्रावास में रहकर, 75 बाल-ब्रह्मचारिणी दीदीयों द्वारा शिक्षा संस्कार, कलात्मक जीवन की बारीकियों से तराशी जा रही हैं।

शुद्ध भोजन, आत्मीय परवरिश के वातावरण में धार्मिक शिक्षण-संस्कारों से ओतप्रोत, हिन्दी भाषा माध्यम से सीबीएससी शिक्षण की यह अनूठी पाठशाला है **गुरुकुल के रूप में**। ये संस्थान चन्द्रगिरि डोंगरगढ़ एवं रामटेक प्रतिभास्थली की श्रृंखला में प्रथम हैं। सचमुच आज की ये बेटियां सर्वांगीण संस्कारों से सुसज्जित होकर भविष्य में एक नहीं दो-फिर दो से चार परिवारों में संस्कारों की खुशबू बिखेरेंगी।

जिनके चिंतन एवं मार्गदर्शन में बालिकाओं के ये संस्थान स्थापित हुए उन्हें कोटि-कोटि प्रणाम- नमोस्तु ।

- नीलम जैन ध.प.सवाई सिंघई श्री सुधीर जैन, कटनी

श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट की बैठक के अवसर पर तीर्थक्षेत्र मढ़ियाजी जबलपुर जाने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ। इसी दौरान ट्रस्टियों के साथ-साथ प्रतिभास्थली जाने का प्रोग्राम भी बना। ब्रह्मचारिणी बहिनों ने कार्यशैली और ज्ञानोदय विद्यापीठ प्रतिभास्थली देखकर लगा कि यह स्थान भी किसी तीर्थक्षेत्र से कम नहीं। क्योंकि यहाँ पर लौकिक शिक्षा के साथ-साथ एक आने वाली पीढ़ी को संस्कारित करने का यह एक सफलतम कार्य है। टीवी शो के माध्यम से

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

मैंने देखा, लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक क्षेत्र में भी पूजन स्वाध्याय गुरुवंदना आदि षट आवश्यक सिखाएं जाते हैं, वहीं शारीरिक स्वस्थता के लिए योगा, प्राणायाम एवं कसरत आदि मनोरंजन के क्षेत्र में नृत्य संगीत, गायन आदि पारिवारिक क्षेत्र में सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, मेहंदी, रंगोली एवं पाककला आदि की शिक्षा भी दी जाती है।

हमारी ब्रह्मचारिणी बहनों (शिक्षिकाओं) के द्वारा दिया गया संस्कार माँ की भूमिका के समतुल्य है। इस संस्कार का बीज कल्पवृक्ष बनकर बच्चियों के जीवनपर्यंत, शीतल छाया बनेगा। मैं गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागर महामुनिराज को कोटि-कोटि नमन करते हुए इस प्रतिभास्थली के लिए मंगलकामना करती हूँ कि ये दिन दूनी रात चौगुनी ऊँचाईयों पर चढ़ती रहे।

- सुमति जैन पाटनी, अध्यक्षा- जैन महिला समाज, हजारीबाग

माननीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन जी की अध्यक्षता में 28 फरवरी, 2015 को जबलपुर में दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की मीटिंग का आयोजन हुआ, जिसमें प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ कन्या आवासीय विद्यालय को देखने का अवसर मिला। जिसमें परमपूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की प्रेरणा से कन्याओं को संस्कारित करने के लिए एक शुभ अवसर समस्त समाज को मिला।

यहां पर एक बड़ा सुखद अनुभव हुआ कि हमारी ब्रह्मचारिणी बहनें नि:स्वार्थ भाव से अपनी सेवाएं देकर बालिकाओं को एक सुदृढ़ नींव दे रही है। जो भविष्य में समाज के लिए एक बड़ा उत्थान होगा।

विद्यालय में - (1) सात्विक पौष्टिक आहार व्यवस्था (2) सुरक्षित एवं सुरम्य प्राकृतिक वातावरण (3) सर्वसुविधायुक्त विशाल छात्रावास (4) खेलकूद के विशाल मैदान (5) मनोरम उद्यान (6) विशाल समृद्ध पुस्तकालय, स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था, कम्प्यूटर प्रयोगशालायें व विज्ञान, गणित प्रयोगशाला आदि सारी सुविधा है।

हमारी ओर से ब्रह्मचारिणी बहनों व बालिकाओं को बहुत-बहुत शुभ कामनायें व उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं।

- हेमचन्द जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली.

श्री मढ़िया, जबलपुर क्षेत्र पर दिनांक 28 फरवरी, 2015 को रखी गई भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की मीटिंग के दौरान प्रतिभास्थली अवलोकन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । इस प्रति भास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ का अवलोकन कर मैं धन्य हो गया। परमपूज्य संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से संचालित प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ जहां 1100 से अधिक गोवंश की सेवा संभाल की जा रही है वहां सभी वर्ग की छात्राएं, जैन- जैनेतर, धनिक-निर्धन कन्याओं को सुसंस्कारित बाल ब्रह्मचारिणी करीब 75 दीदीयों द्वारा सुसंस्कारित किया जा रहा है उनकी शिक्षा, उनका रहन-सहन देखकर मैं दंग रह गया और सोचने लगा कि इस पंचम काल में सतयुग कैसे आ गया। 650 कन्याओं की प्रतिभा, उनके रहन-सहन को देखकर हृदय आनंदित हो गया। इस अनुकरणीय कार्य प्रणाली का मुख्य श्रेय आचार्य गुरुवर की प्रेरणा एवं आशीर्वाद के साथ-साथ बालब्रह्मचारिणी दीदीयों का स्तुत्य योगदान है। मैं अपनी ओर से अपने पूरे परिवार की ओर से उन्हें साधुवाद देता हूँ। प्रतिभास्थली दिन दूना रात चौगुनी प्रगति करे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

- सुनील जैन 'शिवम्', दिल्ली

शनिवार, दिनांक 28/2/2015 को जबलपुर (म.प्र.) स्थित पिसनहारी की मढ़िया में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की वार्षिक मीटिंग थी। दोपहर मीटिंग के समय ही हमें प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ की गाड़ी से प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ प्रांगण में लाया गया। सर्वप्रथम जिनकी प्रेरणा व आशीर्वाद से प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ की स्थापना हुई है उन आचार्यश्री विद्यासागर जी का त्रिबार नमोस्तु ! नमोस्तु ! नमोस्तु !

प्रतिभास्थली में प्रवेश करते ही हमें गौशालाएं दिखायी गयी। उन गोशालाओं को देखते ही मन प्रसन्न हुआ। क्योंकि प्राणीमात्र पर दया भाव रखना ये पहली सीख विद्यार्थियों को दी जाती है। बाद में हम मंदिर गये। इतना भव्य मंदिर की उसमें 500 विद्याथी अपने गुरुओं के साथ एक साथ पूजा में बैठ सकते हैं। एकेडेमिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा भी एक मुख्य अंग है। ये बात तो सभी विद्यापीठों में नहीं होती। हमें इतना बताया गया कि दूसरे संप्रदाय की छात्राएं भी बिना कोई तकरार हमारे जैन धर्म के संस्कार ग्रहण करती हैं। तीसरे कम्प्यूटर रूम- विज्ञान प्रयोगशाला-किचन-सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए ऑडिटोरियम- ड्राइंग रूम- हस्त व्यवसाय- छात्राओं की अभ्यासी का- उनके शयनकक्ष तथा उनके शारीरिक स्वास्थ्य के लिए योगा तथा अन्य शारीरिक कसरतें आदि सब देखकर अत्यानंद हुआ। इतने सब करने के बाद भी सब छात्राएं एकेडेमी शिक्षा में अपनी रैंक कम होने नहीं देती। यह तो बहुत ही प्रशंसनीय बात है।

सबसे ज्यादा प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ में जो साध्वियां (70) हैं ये सब व्रती हैं तथा उनकी उम्र भी कोई ज्यादा नहीं है। उनके त्याग को देखकर उसकी दाद देनी पड़ती है।

- रविन्द्र ग. लेंगड़े, शहापुर (बेलगांव)

सभी तीर्थ हमें आत्मोन्नति की प्रेरणा देते हैं।

भगवान महावीर और अहिंसा

– डॉ॰ दिलीप धींग
(निदेषक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र)

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर अहिंसा के अवतार भगवान महावीर का स्मरण प्रत्येक काल–खण्ड में प्रासंगिक रहा है। हिंसा और विषमता के दौर में उनकी प्रासंगिकता निस्सन्देह बढ़ जाती है। सभ्यता, विज्ञान और तकनीक के इतने विकास के बावजूद भय और अतृप्ति का बढ़ते जाना बहुत बड़ी विभीषिका है।

सारी समस्याओं का मूल है – हिंसा। प्राचीनतम आगम–ग्रन्थ आचारांग–सूत्र में वर्धमान महावीर कहते हैं – सब दुख हिंसा में से उत्पन्न होते हैं। प्रश्नव्याकरण–सूत्र में उन्होंने कहा, प्राणी–वध चण्ड है, रौद्र है, क्षुद्र, अनार्य, करुणारहित और महाभयंकर है। सूत्रकृतांग में कहा, हिंसा में लगे हुए अज्ञानी जीव अन्धकार से अन्धकार की ओर बढ़ रहे हैं।

पद्मविभूषण वैज्ञानिक शिक्षाविद् डॉ. दौलतसिंह कोठारी आचारांग–सूत्र और इसमें वर्णित अहिंसा के सूक्ष्म विवेचन से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने कहा था कि अहिंसा के बगैर विज्ञान अधूरा और प्रलयंकारी है। इस तथ्य को मैंने काव्य में यूँ ढाला –

मिल जाए छोर गर अध्यात्म औ' विज्ञान के।
खुल जाए द्वार अभिनव ज्ञान औ' विज्ञान के।
मिटेगा अज्ञान तम और प्रलय के बादल छटेंगे।
मनुष्य ही हो एक तो क्यों राष्ट्र आपस में बँटेंगे ?
यह अहिंसा का ज्ञान जब विज्ञान की यात्रा करेगा
और जब विज्ञान भी इस ज्ञान की यात्रा करेगा।
तब विश्व में होगी परस्पर विश्वसनीयता।
मैत्री समस्त प्राणियों से प्रकृति–प्रियता।

आचारांग में वनस्पति, जल, हवा, पृथ्वी और अग्नि में भी चेतना होने की उद्घोषणा है। वनस्पति में जीव होने की स्वीकृति 20वीं सदी के आरम्भ में जगदीश चन्द्र बोस के प्रयोगों के पश्चात् विज्ञान ने भी दी। आज पर्यावरण की रक्षार्थ पेड़–पौधों, जल, हवा, धरती आदि को आहत नहीं करने की चेतावनियाँ दी जाती हैं। ऐसे में भगवान महावीर की अहिंसा की सार्थकता तीव्रता से महसूस होती है।

तीर्थंकर महावीर बहुत सटीक कहते हैं – 'जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू परिताप देना चाहता है, वह तू है। जिसे तू शासित करना चाहता है, वह तू ही है।' पर–हिंसा के साथ होने वाली स्व–हिंसा मनुष्य देख नहीं पाता है। हिंसा से आत्मा मलिन व पतित होकर अधोगति में जाता है। हिंसा और प्रतिहिंसा तथा इनसे निष्पन्न अगणित बुराइयों के एक अन्तहीन दुष्चक्र में आत्मा फँस जाता है।

वातावरण में क्रूरता और घृणा की विकिरणों व परमाणुओं से न सिर्फ मानव–समाज अपितु सम्पूर्ण प्रकृति दुष्प्रभावित होती है। मानवीय सम्बन्धों में सौहार्द्र का अभाव और पर्यावरण–प्रदूषण जैसी समस्याएँ हमारे सामने अनेक सवाल खड़े करती है। उनका एक शब्द में समाधान है – अहिंसा। वर्धमान महावीर कहते हैं – 'हिंसा और शस्त्र तो एक से बढ़कर एक हैं। पर, अहिंसा और अशस्त्र से बढ़कर कुछ नहीं है।'

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के ज्येष्ठ

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

पुत्र चक्रवर्ती भरत, जिनके नाम से हमारे देश का नाम भारत हुआ, तथा दूसरे पुत्र बाहुबलि में छोटी--सी बात को लेकर युद्ध छिड़ गया। लेकिन असंख्य वर्षों पूर्व हुए उस युद्ध में सेना और शस्त्रों का प्रयोग नहीं किया गया। बाहुबलि ने शस्त्रास्त्र–प्रयोग की मनाही करके विश्व को निरस्त्रीकरण का प्रथम–सन्देश दिया।

आज विश्व में हिंसा, हथियारों और हिंसा के प्रशिक्षण पर अनाप–शनाप खर्च किया जा रहा है। यदि इसका शतांतिश भी अहिंसा और अहिंसा के प्रशिक्षण पर खर्च किया जाय तो मनुष्य जाति का बहुत भला हो सकता है। यह धरती स्वर्ग से ज्यादा सुन्दर और सुखद हो सकती है।

भगवान महावीर का अहिंसा का सिद्धान्त सारे सिद्धान्तों का सिद्धान्त है। उसकी वैज्ञानिकता अकाट्य, मौलिक और त्रकालिक है। उसकी उपयोगिता असन्दिग्ध और शाश्वत है। आत्मा की समानता और आत्मा की स्वतन्त्रता अहिंसा सिद्धान्त के केन्द्रीय तत्व हैं। द्रव्य की दृष्टि से संसार की समस्त आत्माएँ समान हैं और अस्तित्व की दृष्टि से पूर्ण स्वतन्त्र। इसलिए महावीर का धर्म और दर्शन महज मानवतावादी ही नहीं है, वरन् उससे भी आगे, बहुत आगे आत्मवादी है। उनका मानववाद, आत्मवाद को पुष्ट करता है और आत्मवाद मानववाद को। इस प्रकार दोनों ही पृथक एवं अपृथक रूप से अहिंसा–सिद्धान्त को श्रेष्ठतम, उच्चतम, सूक्ष्मतम और विराटतम बना देते हैं। उसके इतने आयाम खड़े होते हैं कि वहाँ अनेकान्त जैसा परम उपयोगी और मौलिक दर्शन सहज ही प्रसूत होता है। रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अनेकान्त के अनुसन्धान को अहिंसा की साधना का उत्कर्ष बताया। महात्मा गांधी ने कहा था कि अहिंसा का सर्वाधिक विवरण भगवान महावीर ने प्रस्तुत किया। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि जगत के अन्य किसी धर्म में अहिंसा–सिद्धान्त का प्रतिपादन इतनी सफलता से नहीं मिलता है।

भगवान महावीर ने मानव को मुख्यतः पाँच व्रतों के पालन करने की देषना प्रदान की। उनमें प्रथम है – अहिंसा। उसके आगे हैं – सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। ये जो आगे के चार व्रत हैं, उनकी व्यवस्था प्रथम अहिंसा व्रत की सम्पूर्ण/समग्र अनुपालना के लिये हैं। व्यक्ति ऊँची शिक्षा प्राप्त कर लें, बहुत ज्ञान अर्जित कर लें, किन्तु यदि उसके हृदय में करुणा और प्रेम नहीं है तो सब व्यर्थ है। सूत्रकृतांग में कहा है –

एवं खु नाणिणो सारं, जं न हिंसई किंचण।
अहिंसा समयं चेव, एतावन्तं वियाणिया।

ज्ञानी होने का सार यही है कि व्यक्ति किसी जीव की हिंसा न करें। अहिंसामूलक समता ही धर्म का सार है। बस, इतनी–सी बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिये।

भगवान महावीर बहुत सरल भाषा में कहते हैं – सुख सबको प्रिय है, दुख अप्रिय। सभी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। हम जैसा व्यवहार स्वयं के प्रति चाहते हैं, वैसा दूसरों के प्रति भी करें। यही मानवता है और मानवता का आधार भी। मानवता बचाने में है, मारने में नहीं। किसी भी मानव, पशु–पक्षी या प्राणी को मारना, काटना, प्रताड़ित करना स्पष्टतः अमानवीय और क्रूरतापूर्ण है। हिंसा–हत्या और खून–खच्चर का मानवीय–मूल्यों से कभी कोई सरोकार नहीं हो सकता। मूल्यों का सम्बन्ध तो 'जियो और जीने दो' जैसे सरल श्रेष्ठ उद्घोष में समाहित है।

अहिंसा समस्त प्राणियों को सुख देने वाली है। समस्त संसार का मंगल करने वाली है। महासत्ता में अहिंसा एक शाश्वत तत्व है। उसके साथ खिलवाड़ से नैसर्गिक समरसता भंग होती है। जिसके विपरीत परिणाम सबको भोगने पड़ते हैं। इसलिए भ. महावीर ने भाव और द्रव्य, दोनों प्रकार की हिंसा का निषेध किया। स्थायी शान्ति के लिए व्यक्ति के चित्त से हिंसा के संस्कारों का हटना आवश्यक है। मेरा एक मुक्तक है–

अहिंसा की प्रथम पहचान भाव–शुद्धि है।
अहिंसा का प्रकर्श प्रतिमान अक्रूर–बुद्धि है।
सहज खिल जाते भान्ति समता के सुमन,
अहिंसा का प्रधान परिणाम सर्व–समृद्धि है।

यह बात दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है कि हिंसा किसी भी समस्या का स्थायी और निरापद समाधन नहीं है। अपितु हिंसा स्वयमेव एक समस्या और अनेक समस्याओं की जन्मदात्री है। तीर्थंकर महावीर ने अहिंसा पर इतना जोर दिया कि अहिंसा, जैन–धर्म और भगवान महावीर एक दूसरे के पर्याय हो गये। मेरे इस मुक्तक के साथ इस लेख को विराम देता हूँ –

न्याय के लिए नैतिकता का नीर चाहिये।
सत्य के लिए समता का समीर चाहिये।
विश्व खड़ा है विनाश के कगार पर,
अहिंसा के अवतार प्रभु महावीर चाहिये।

Director : ICPSR
18, Ramanuja Iyer Street
Sowcarpet, Chennai – 600001

विश्व शांति के प्रेरक भगवान महावीर और इक्कीसवीं सदी का भारत

- ध्रुव कुमार जैन, कटरी मेदनीगंज, प्रतापगढ़(उ.प्र.)

विश्व शांति के प्रेरक, अहिंसा के अग्रदूत एवं महान लोक-उद्धारक भगवान महावीर की २६१४वीं जयंती ०२ अप्रैल, २०१५ को पूरा राष्ट्र मना रहा है। ईसा पूर्व ५९९, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को भगवान महावीर का, इस पावन भारत भूमि पर, बिहार प्रांत के कुण्डलपुर नगर में सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला के उदर से, उस समय जन्म हुआ था, जब सम्पूर्ण विश्व अशांति, अराजकता, अनाचाय, अत्याचार, हिंसा एवं तरह-तरह के पापाचारों को ज्वाला में धधक रहा था। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई थी, जनता सत्य का दर्शन करना चाहती थी, आत्मा एक पुण्य पुरुष की खोज में तड़प रही थी। ऐसे समय में इस पावन धरा पर भगवान महावीर रूपी सूर्य ने जन्म लेकर सम्पूर्ण विश्व में अहिंसा की अलख जगा करके शांति की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

महावीर युग धार्मिक जगत में एक अद्भुत क्रांति, तत्व चिंतन एवं दार्शनिक प्रधान युग था। भगवान महावीर ने परमात्म अवस्था को प्राप्त कर भारत में ही नहीं सारे संसार में सत्य ज्ञान जागृति कर नव चेतना की लहर व्याप्त कर दी थी।

भगवान महावीर न केवल एक महान धर्म संस्थापक थे, अपितु वे महान लोकनायक, धर्मनायक, क्रांतिकारी उपदेष्टा, सच्चे पथ-प्रदर्शक, विश्व बंधुत्व के ज्वलन्त प्रतीक और प्राणी मात्र के परमप्रिय एवं हित चिंतक थे। उन्होंने मानव समाज को ही नहीं, पशु-पक्षियों तक को अहिंसा और प्रेम का पाठ पढ़ाया। धर्म के नाम पर यज्ञों में दी जाने वाली क्रूर पशु बलि के विरुद्ध जनमत को आंदोलित कर इस घोर कुकृत्य को सदा के लिए समाप्त कर असंख्य प्राणियों को अभयदान दिया।

भगवान महावीर ने मानव समाज हितार्थ आत्मवाद, वस्तु-स्वातन्त्रय अहिंसा, रत्नत्रय,अपरिग्रह और अनेकांत आदि कल्याणकारी उपदेशों को प्रसारित किया। उनके द्वारा उपदेशित ये सिद्धांत आज भी प्राणी हित, राष्ट्र हित एवं विश्व हित हेतु अमोघ अस्त्र है, बशर्ते राष्ट्र इस पर ध्यान दे और यदि सब कुछ जानते हुए, मानते हुए भी राष्ट्र इस पर ध्यान नहीं दे पा रहा है तो हमारा कर्तव्य बनता है कि अपने-अपने प्रयासों द्वारा राष्ट्र का ध्यान इस ओर लावें।

भगवान महावीर की जयंती एक चिंतन का दिन है- अब तक हमने अपने धर्म हितार्थ इस राष्ट्र से क्या पाया? भगवान महावीर की जयंती एक चिंतन का दिन है- हमने अहिंसा धर्म एवं जीवों के कल्याणार्थ इस राष्ट्र से क्या पाया? और भगवान महावीर की जयंती एक चिंतन का दिन है कि अब तक हमने अपने समाज, जिन मंदिरों और तीर्थों हितार्थ इस राष्ट्र से क्या पाया?

महावीर की जयंती आयेगी और चली जायेगी। 'आज जयंती किसकी है- महावीर की- महावीर की' चिल्लायेंगे, नारा लगायेंगे, बढ़िया खाना खायेंगे और सो जायेंगे। बस ऐसा ही अब तक होता चला आ रहा है और ऐसा ही तब तक होता रहेगा, जब तक हम अपनी उपलब्धियों पर चिंतन नहीं करेंगे।

महावीर जयंती के दिन हमारो राष्ट्र प्रमुख अपने संदेशों में भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपनाने पर बल देते हैं और उनके अहिंसामयी धर्म से विश्व शांति की कामना भी करते हैं, परन्तु उनके सिद्धांतों के अनुपालन करने और कराने में क्यों पीछे है? जबकि उन्हीं सिद्धांतों के अनुपालन में ही राष्ट्रहित है।

कभी-कभी यह विचार मन में अवश्य कौंधताहै कि क्या यह वही भारतभूमि है, जहां देवता और बड़े-बड़े ऋषि मुनि जन्म लेने के लिए तरसते थे। जहां राम, कृष्ण, महावीर आदि ने जन्म लेकर इस बसुंधरा को पावन किया और जहां शेर और गाय एक घाट पर पानी पीते थे। तब और अब में बहुत बड़ा परिवर्तन हो चुका है।

पहले विशाल मंदिरों में घंटे गूंजते थे, अब विशाल स्लाटर हाउसों में पशुओं का करुण क्रंदन। तब राष्ट्र को सुदृढ़ रखने हेतु धार्मिक क्रियाओं के मा से योग की शिक्षा दी जाती थी, और अब यानि की शिक्षा के साथ-साथ एड्स से बचने की जानकारी भी दी जाती है। तब अणुव्रत देकर प्राणी को कल्याण के मार्ग पर अग्रसर किया जाता था और अब अणु बम बनाकर सम्पूर्ण मानवता को विनाश की ओर अग्रसर कर दिया गया है। 'संडे हो या मंडे, रोज खाओ अंडे' आदि हिंसात्मक प्रचार राष्ट्र के संदेश के रूप में प्रसारित हो रहा है।

हमारे देश के वैज्ञानिक प्रकृति का संतुलन न बनाये रखने पर गम्भीर परिणामों की चेतावनी दे रहे हैं और दूसरी तरफ सुतुलन को बनाये रखने वाले कारकों का पूरी तरह से सफाया कर दिया जा रहा है। केवल हिंसा ही हिंसा, चीत्कार ही चीत्कार। जो बोल सकते हैं वे तो अपनी फरियाद इस देश के संविधान तक तो पहुंचा दे रहे हैं लेकिन जो बेजुबाँ हैं वे अपनी फरियाद किसको और कैसे सुनायें। बड़े शर्म की बात है कि -भगवान महावीर का प्रमुख संदेश 'जीवो और जीने दो' जिसे इस नीले गगन पर स्वर्णाक्षरों में चमकते रहना था, आज टूकों के पीछे एक पतली पट्टी परधूल-धूसरित नजर आ रहा है।

प्रश्न यह है कि क्या इस हिंसा प्रधान देश में भगवान महावीर के सिद्धां का कोई अस्तित्व है? और यदि नहीं तो उनकी जयंती मनाने का औचित्य ही क्या? यदि उनकी जयंती मनानी है तो उनके सिद्धांतों का खूब प्रचार-प्रसार हो, हमारे राष्ट्र प्रमुख उनके सिद्धांतों को अपनावे इस पर बल दिया जाये ।

हिंसा से इस विश्व को बचाने के लिए, सृष्टि को उसके विनाश से बचाने के लिए, अपनी धार्मिक मांगों को राष्ट्र प्रमुखों से मनवाने के लिए, अपने तीर्थों के विकास के लिए आज हमारे धर्म को ऐसे महावीर सैनिकों की जरूरत है, जो दिगम्बर-श्वेताम्बर और पंथों के बंधन तोड़कर केवल 'जैन' बनकर एक साथ हो, फिर कैसे नहीं बहेगी इस देश में 'अहिंसा' की गंगा और कैसे रुकेगा हमारे तीर्थों का विकास।

महावीर जयंती की इस पावन तिथि पर हम क्यों न एक कदम 'अहिंसा तथा जीवों के कल्याणार्थ बढ़ायें, हो सकता है कि हमारा यह कदम भगवान महावीर के सिद्धांतों के प्रतिपादन में सहायक हो, और हम भी उनकी सेना का एक सिपाही बन जायें।

जय जिनेन्द्र ।

देवालय में विराजित जिनदेव तीर्थ हैं - यह व्यवहार का कथन है (योगसार, दो. 4)

जैन समाज की दो प्रमुख धाराओं के बीच समन्वय हेतु पांचवीं बैठक अहमदाबाद में सम्पन्न

वाएं से श्री श्रीपालजी शाह- ट्रस्टी- सेठ आनंदजी कल्याणजी ट्रस्ट, श्री सुधीरभाई मेहता- ट्रस्टी- सेठ आनंदजी कल्याणजी ट्रस्ट, श्री वसंतलाल एम. दोशी- उपाध्यक्ष- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री प्रकाशभाई जवेरी- कार्यकारिणी निदेशक- श्वेताम्बर तीर्थरक्षा कमेटी, श्री सुधीर कुमार जैन- राष्ट्रीय अध्यक्ष-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री संवेगभाई- अध्यक्ष- सेठ आनंदजी कल्याणजी ट्रस्ट, डॉ. संजय शाह- कार्यकारी निदेशक- श्वेताम्बर तीर्थरक्षा कमेटी, श्री सोभागमलजी कटारिया- वरिष्ठ मार्गदर्शक- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री पंकज जैन- महामंत्री- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी।

वैभव से वैराग्य की ओर - निशा साध्वी बनी

भारतीय मूल के अमेरिका में बसे जैन उद्योगपति मनोज कापसी और माँ मंजरी कापसी की इकलौती 27 वर्षीय बिटिया सुश्री निशा अमेरिका में ही जन्मी उसने न्यूयार्क से फैशन डिजाइनिंग कर वहीं एक लाख डालर, भारतीय मुद्रा में 65 लाख रुपये प्रतिमाह की नौकरी की, पर यह वैभव उसे रास नहीं आया, आत्मिक सुख की प्राप्ति सांसारिक वैभव से नहीं हो सकती और उस खोज में अमेरिका से कई बार भारत आकर महीनों रही निशा को क्षणिक सुख की अपेक्षा स्थायी खुशी की तलाश थी और बिटिया की खुशी के लिए उसके पालकों ने कभी सोचा न था कि ऐशो आराम से पली बिटिया वैराग्य के मार्ग पर जा रही है जहाँ उसे आंतरिक खुशी मिलना है और वैराग्य को जानने, समझने के लिए निशा ने भारत में सम्मेदशिखर में साध्वी दीक्षा ग्रहण की।

दीक्षा के उपरांत जब निशा से पूछा गया कैसा महसूस करती हैं आप? निशा ने कहा भौतिक दुनिया में बहुत तनाव है! अशांति है! भागदौड़ मची हुई है और यही सब विनाश के कारण हैं वहाँ रहते हुए शांति की तलाश नहीं की जा सकती। यहाँ शांति है, संयम है, श्वेत वस्त्र ही शांति और संयम का प्रतीक है। इस नश्वर शरीर से कोई आसक्ति नहीं। आत्म शांति का यह मार्ग अतुलनीय अमूल्य है मेरे लिए। अमेरिका स्थित युवा फैशन डिजाइनर ने साढ़े सात करोड़ सालाना का पैकेज ठुकरा, आत्म शांति की खोज में विश्व देशों में भारत को आध्यात्म के शिखर पर ला दिया। वैश्वीकरण के इस दौर में ग्लोबलाइजेशन के बाद बहुत तेजी से बदलाव आए हैं, आर्थिक उदारीकरण में युवाओं का ताना-बाना न्यूनतम संसाधनों से अधिकतम लाभ अर्जित करने की सोच मल्टीनेशनल कंपनियों में कमाई के अच्छे स्रोत वैभवता तो ओढ़ सकते है पर इसके दूरगामी परिणाम समाज के प्रति मानवीय संवेदनाएं, सरोकारों, पारंपरिक मूल्यों में गिरावट आई है, निशा कापसी भी वैभवता के उच्चतम शिखर को छू जैन संस्कृति, विचारों और चिंतन की लंबी समृद्धि परंपरा का पालन कर आत्मशांति की खोज में वैराग्य की ओर बढ़ा कदम सारे भौतिक सुखों को त्यागकर एक साध्वी का जीवन अंगीकार कर आज की युवा पीढ़ी अचंभित है उनके इस कदम से।

- सुबोध मलैया, सागर

णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिया। अर्थ- जिन प्रतिमा निर्ग्रन्थ, वीतराग होती है (बोधपाहुड, गा.10)

महाराष्ट्र अंचल की कार्यकारिणी समिति की बैठक शिरपुर (महा.) में सम्पन्न

रविवार दिनांक 22 फरवरी, 2015 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल की कार्यकारिणी समिति की बैठक श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र, शिरपुर (महा.) में अंचल के अध्यक्ष श्री प्रमोद कासलीवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें एडवोकेट श्री माणिकचंद बज (वाशिम), श्री राजकुमार चवरे (कारंजा), श्री चन्द्रशेखर उकलकर के अतिरिक्त कार्यकारिणी समिति के करीब 23 महानुभाव उपस्थित थे। सभा में निम्नलिखित निर्णय लिये गये -

- गत बैठक की कार्यवाही प्रस्तुत की गई जो सर्वसम्मति से स्वीकृत की गई।
- महाराष्ट्र अंचल के सभी तीर्थक्षेत्रों पर कार्यरत पुजारी आदि कर्मचारियों का अपघाती एवं मेडिको वीमा योजना का एक वर्ष का प्रीमियम महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार कासलीवाल, औरंगाबाद एवं उनके परिवार की ओर से कराये जाने की घोषणा की गई, जिसकी प्रशंसा की गई।
- श्री मांगीतुंगी जी क्षेत्र को सीढ़ियों के निर्माण हेतु रु. 2,51,000/- को अनुदान तीर्थक्षेत्र कमेटी से भिजवाये जाने की अनुशंसा की गई।
- एलोरा गुरुकुल के विद्यार्थियों के लिए रु. 2,75,000/- की सहायता दिये जाने की अनुशंसा की गई।
- श्री 008 चन्द्रप्रभु दिग.जैन अति.क्षेत्र मांडल (जलगांव) का अतिशय क्षेत्र श्रेणी के अंतर्गत सम्बद्ध किये जाने की अनुशंसा की गई।
- अनुदान के संबंध में प्राप्त आवेदन पत्रों पर चर्चा विचारणा के पश्चात निम्नलिखित क्षेत्रों को अनुदान देने की अनुशंसा की गई-

(अ) श्री अंतरिक्ष पार्श्व. दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र , सिरपुर को पवली मंदिर की बाउंड्रीवाल बनाने हेतु रु. 10 लाख

(ब) श्री जिन्तूर क्षेत्र (प्रवेश द्वार) के निर्माण हेतु रु. 1 लाख

(स) श्री कलिकुंड पार्श्व.दिग.जैन सिद्धातिशय क्षेत्र कुंडल रु. 2 लाख

- श्री मांगीतुंगी जी क्षेत्र पर आगामी वर्ष 2016 में दिनांक 11 से 16 फरवरी, 2016 को होने जा रहे समारोह की जानकारी दी गई।

प्रमोद कुमार कासलीवाल
अध्यक्ष-महाराष्ट्र अंचल

देवेन्द्र कुमार काला
महामंत्री-महाराष्ट्र अंचल

महाराष्ट्र की वर्तमान सरकार का हृदय से आभार एवं अभिनन्दन

20 वर्षों के संघर्षों के बाद वर्तमान महाराष्ट्र सरकार एवं महाराष्ट्र के गोरक्षा प्रेमियों के अथक प्रयासों से महाराष्ट्र प्राणी संरक्षण (संशोधन विधेयक 1995) को महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने दिनांक 26.02.2015 को हरी झंडी दे दी है। मंजूरी मिलते ही महाराष्ट्र सरकार द्वारा उसे त्वरित अमल में लाने के लिए ठोस कदम उठाये गये हैं।

गौमांस के व्यापारियों ने इस प्रतिबंध को लेकर मुंबई उच्च न्यायालय में अर्जी की थी जिसे कोर्ट ने रिजेक्ट करते हुए राहत देने से इनकार कर दिया और कहा कि महाराष्ट्र अधिनियम अमल में आ चुका है और राजपत्र (गजट) में इसे अधिसूचित भी किया जा चुका है। इस विधेयक को स्वीकृत कराने में हमारे भारत के अहिंसा प्रेमियों, जीव दया प्रेमी संस्थाओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है। हम सभी का तहेदिल से आभार व्यक्त करते हैं।

मुख्यमंत्री को बधाई

०३/०३/२०१५

माननीय श्री देवेन्द्र फडणवीस

मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र राज्य

[illegible]लय,

मुंबई.

विषय : महाराष्ट्र प्राणी संरक्षण (संशोधन) विधेयक १९९५ को लागू करने हेतु धन्यवाद ज्ञापन ।

मान्यवर,

महाराष्ट्र राज्य में वैध और अवैध रूप से पिछले कई वर्षों से भारी संख्या में गोवंश की हत्या की जा रही है, जिससे राज्य में तेजी से पशुधन की कमी होती जा रही है । इसका महाराष्ट्र में पर्यावरणीय दुष्प्रभावों के साथ-साथ कृषि पर भी इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। गाय भारतवासियों के लिए आस्था का केन्द्र बिन्दु है जिसे जनता 'गोमाता' के रूप में पूजती है।

अक्टूबर, २०१४ में नवनिर्वाचित आपकी महायुति गठबंधन सरकार ने **महाराष्ट्र प्राणी संरक्षण (संशोधन) विधेयक, १९९५** पर राष्ट्रपति महोदय की मंजूरी के लिए त्वरित कदम उठाए, जो बहुत अनुकरणीय है क्योंकि यह विधेयक लगभग दो दशकों से लंबित पड़ा हुआ था। आपकी सरकार ने इस विधेयक पर अपनी मंजूरी के सभी सार्थक कदम उठाए, हम इस कार्य के लिए शुद्ध अंतःकरण से आपके अत्यन्त आभारी हैं, यह एक ऐतिहासिक पल है जब विधेयक को राष्ट्रपति [illegible]मंजूरी मिलने से कानूनी मान्यता को प्राप्त हुआ है।

इस कानून के यथारूप में क्रियान्वयन होने से आने वाले समय में गोवंश की हत्या पर रोक लगने से कृषि में उन्नति, पर्यावरण पर होने वाले दुष्प्रभावों पर नियंत्रण, गोवंश से प्राप्त होने वाले गोबर से वैकल्पिक ऊर्जा के साधनों को बढ़ावा, गोबर से ऊर्जा उत्पत्ति के नए तरीकों के नवान्वेषण (नवाचार) में प्रगति, दुग्ध पदार्थों की बढ़ती कीमतों में स्थिरता, भारत की धार्मिक आस्थाओं का संरक्षण एवं संविधान के अनुच्छेद ४८ के अंतर्गत उल्लिखित नीति-निदेशक सिद्धांतों की अनुपालन सुनिश्चित हो सकेगी। सम्पूर्ण महाराष्ट्र में पशुधन के संरक्षण के लिए अब **महाराष्ट्र प्राणी संरक्षण (संशोधन) अधिनियम** को कड़ाई से लागू किये जाने की आवश्यकता है ताकि गोवंश के नृशंस कत्ल पर प्रभावी रोक लगाई जा सके, गोमांस के अवैध निर्यात को रोका जा सके। हम आशा करते हैं कि देवनार जैसे सरकारी कत्लखानों में गोवंश के अवैध कटान को तुरंत कड़ाई से रोकने के लिए महाराष्ट्र शीघ्र ही सकारात्मक कदम उठाएगी।

हम अनुरोध करते हैं कि राज्य के सभी सरकारी (नगरपालिका संचालित) एवं लायसेंस प्राप्त निजी कत्लखानों में **महाराष्ट्र प्राणी संरक्षण (संशोधन) अधिनियम, देश/राज्य के पर्यावरण संरक्षण संबंधी कानून** एवं **पशु क्रूरता निवारण अधिनियम** आदि के पालन के लिए **सीसीटीवी कैमरे** लगाने के निर्देश जारी किए जाएं और इन कत्लखानों की निरंतर निगरानी के लिए पशु अधिकार कार्यकर्ताओं एवं पशुप्रेमियों के **एक विशेष दल** का गठन किया जाए, जिससे कानून का उल्लंघन करने वाले कत्लखानों के संचालन पर रोक लग सके तथा अवैध रूप से गोवंश की हत्या करने वाले मालिकों को कानून के अनुसार दंडित किया जाए।

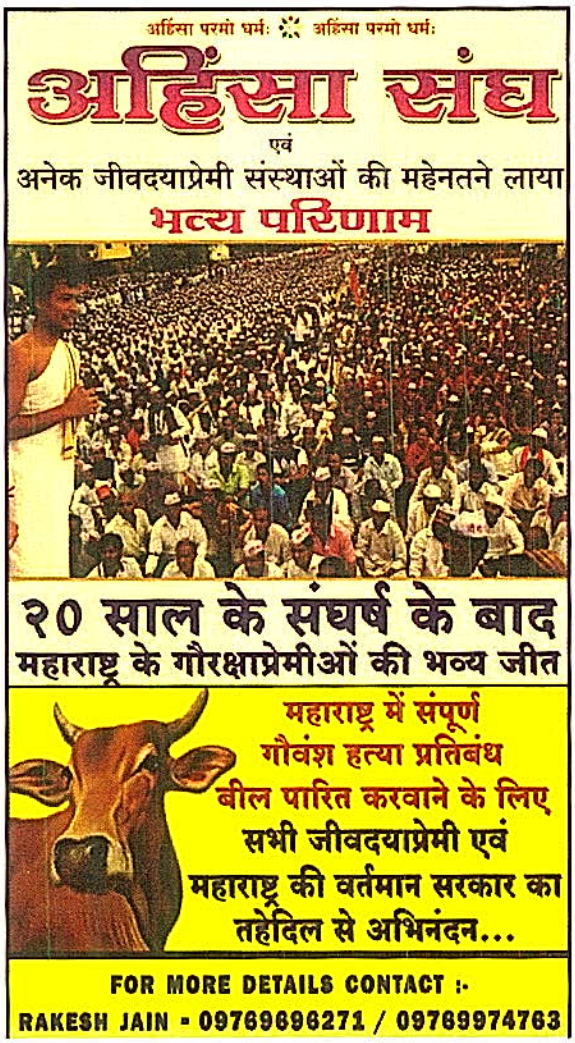

हम, पुनश्च भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई अहिंसा संघ मुंबई, दयोदय महासंघ भोपाल, विनियोग परिवार मुंबई, समस्त महाजन- मुंबई एवं भारत के करोड़ों अहिंसा प्रेमियों की ओर से आपके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

धन्यवाद सहित ।

आपका,

(पंकज जैन) प्रबंध निदेशक, जैन धार्मिक चैनल पारस टीवी

महामंत्री

संतो हि हितभाषिणः (उत्तरपुराण, पर्व 70, श्लोक 325) । अर्थ- साधु-संत आत्महित का उपदेश देते हैं ।

'सिद्धायतन' आत्मसाधना केन्द्र अप्रैल, 2016 से उपलब्ध

कोलकाता/ सम्मेदशिखर, 6 फरवरी। पवित्र स्थल श्री सम्मेदशिखरजी में अत्याधुनिक सुख-सुविधाओं से भरपूर निर्माणाधीन आध्यात्मिक आत्म-साधना केन्द्र 'सिद्धायतन' अप्रैल, 2016 से चालू हो जाएगा। प्रकृति की गोद में बसे शिखरजी के शांत परिवेश में श्रावक-श्राविकाएं अपना समय व्यतीत कर सकते हैं। **यह एक आध्यात्मिक रिसॉर्ट होगा, जहां किसी भी उम्र वर्ग की श्रावक-श्राविकाएं अल्पावधि के लिए रह सकती हैं। अल्पावधि के लिए रहने वाले किसी भी उम्र के हो सकते हैं, किन्तु दीर्घावधि में रहने के लिए श्रावक-श्राविका की उम्र 55 वर्ष होनी चाहिए।** यहां रहने से उनका आध्यात्मिक, मानसिक, बौद्धिक एवं शारीरिक विकास होगा एवं जीवन में नवीनता आएगी। शिखरजी मे **लॉर्ड पार्श्वनाथ फाउण्डेशन** द्वारा इसका निर्माण तेजी से किया जा रहा है।

फाउण्डेशन के प्रमुख श्री संतोष कुमार सेठी ने यहां बताया कि आज समाज में ऐसे आवास को नितान्त आवश्यकता है। हमारे श्रावक-श्राविका सम्मेदशिखर की पावन धरा पर स्थायी या अस्थायी रूप से समय व्यतीत करने की इच्छा रखते हैं, जो अपनी इच्छानुसार अस्थायी रूप से कुछ दिनों के लिए अथवा स्थायी रूप से दीर्घावधि के लिए या आजीवन रह सकते हैं। यह पूरी तरह से लाभ निरपेक्ष एवं सामाजिक भावना से प्रेरित है। श्री जैन ने बताया, 'हमारा उद्देश्य अपने श्रावक-श्राविकाओं को एक सुरक्षित, मैत्रीपूर्ण एवं मेल-जोल का वातावरण प्रदान कर उनकी सेवा करना है। इस प्रवास स्थल की रूपरेखा प्रसिद्ध **एज वेंचर्स इंडिया** एवं वास्तुविद **राज अग्रवाल एंड एसोसिएट्स** की मदद से सतर्कतापूर्वक तैयार की गई है।'

उल्लेखनीय है कि पार्श्वनाथ की पवित्र पहाड़ियों में जैन धर्म के 24 में से 20 तीर्थंकरों, करोड़ों साधुओं, मुनियों को मोक्ष प्राप्त हुआ है। पार्श्वनाथ की हरी-भरी पहाड़ियों में 2.75 एकड़ में फैला सिद्धायतन भौतिक, सामाजिक, पर्यावरणीय, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक अनुकूलता का बेजोड़ मिश्रण है। श्री जैन के अनुसार, 'सिद्धायतन' में 9 भवन होंगे, जो प्रत्येक तल्ले पर आपस में जुड़े होंगे। यहां 275 लोगों के लिए कुल 160 अपार्टमेंट होंगे। इसके अतिरिक्त कर्मचारियों के आवास के लिए दो अतिरिक्त भवनों का निर्माण किया जा रहा है। सिद्धायतन दान को पांच श्रेणियों यथा सहयोगी, विशिष्ट सहयोगी, संरक्षक एवं परम संरक्षक के तहत में विभाजित किया गया है। इसके अलावा संरक्षक के रूप में, स्वर्ण (Gold), माणिक्य (Ruby), हीरक (Diamond) एवं प्लैटिनम (Platinum) संरक्षक बनकर भी सिद्धायतन को सहयोग दिया जा सकता है। दातारों के अधिकार सिद्धायतन के परिचालन की तिथि से 40 वर्षों के लिए आरक्षित होंगे तथा अंतिम नामांकित व्यक्ति/व्यक्तिगत उस अवधि तक या उसके पश्चात तक अपनी इच्छा के अनुसार रह सकते हैं।

सिद्धायतन परिसर में मंदिर, स्वाध्याय केन्द्र, सामुदायिक हॉल, पुस्तकालय एवं अनुसंधान केन्द्र, क्रीड़ा कक्ष (इंडोर खेलों का कक्ष), क्रीड़ा स्थल - मैदान एवं टैरेस पर, हॉबी सेंटर, फिजियोथेरेपी, व्यायाम एवं मालिश केन्द्र, डायनिंग हॉल के साथ केन्द्रीय रसोई- शोध एवं प्रतिमाधारियों के लिए, चिकित्सा केन्द्र, डिपार्टमेंटल स्टोर, एलिवेटर्स के सामने बैठने का स्थान, लिफ्ट में पकड़ने के लिए 'ग्रैब बार्स', स्ट्रैचर्स के लिए बड़े आकार के लिफ्ट जैसी अनेकों सुविधाएं उपलब्ध हैं। **विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें**

: यूट्यूब चैनल :

www.youtube.com/uscr/siddhayatan1 **एवं फेसबुक पर** www.facebook.com/siddhayatan.madhuban

जयपुर में संपन्न क्षुल्लिका दीक्षा का दृश्य

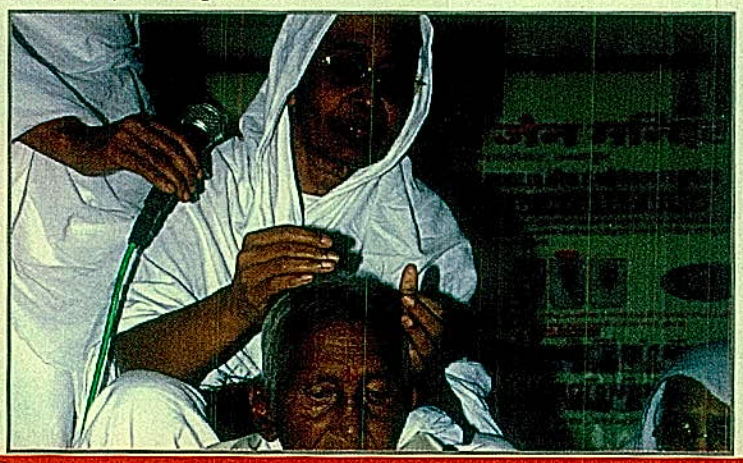

परोपकारी के हाथ का धन उस वृक्ष के समान है जो औषधियों का सामान देता है और सदा हरा बना रहता है (तिरुवल्लूर)

नित्य देवदर्शन क्यूँ?

डॉ श्रीमती रंजना पटोरिया, सिविल लाइन, कटनी

फुरसत नहीं है इंसान को,
घर से मंदिर तक आने की।
और ख्वाइशें रखते है सीधे,
श्मशान से स्वर्ग तक जाने की।

क्या करें ऐसी सभ्यता का? क्या कहें उन फारवर्ड (आधुनिक) लोगों से? कैसे समझाएँ उन पढे–लिखे समझदारों को ? जो स्वयं को समझदार पढा लिखा, सभ्य व आधुनिक मान बैठे हैं।

आज का अधिकांश पढा लिखा वर्ग भौतिकवादी व भोगवादी होता जा रहा है। इस प्रवृत्ति में ही उसे आधुनिकता दिखाई जाती है। सबेरे उठने से पहले बिना हाथ–मुँह धोये बैड टी चाहिए। फिर टीव्ही, न्यूजपेपर यही सब उनके स्वाध्याय हैं। स्नानादि नित्य कर्मो में भले ही घण्टों बिता दें, परंतु देवदर्शन नाम की चीज तो दैनिक चर्या में शामिल ही नहीं है।

ये आधुनिक लोग नास्तिक नहीं है, कभी–कभी त्योहारों, उत्सवों व धार्मिक त्योहारों में शौकिया मंदिर जाते हैं ,जब कभी इन्हें मुसीबत आ घेरती है या फिर किसी वस्तु विशेष के आकांक्षी होते है, तब ये भगवान को याद अवश्य करते हैं।

आज के पढे लिखे वर्ग में देवदर्शन के प्रति उत्साहहीनता का जबरदस्त कारण यह भी है कि जो पुरातनपंथी, रूढिवादी, इने गिने लोग जीवन भर प्रतिज्ञाओं का निर्वाह करते है । फिर भी वही घृणा, वही बेइमानी, वही अशांति, उनके जीवन में दिखाई देती है। तो उन्हें लगता है, हममें और उनमें क्या फर्क उनसे तो अच्छे हम हैं।

देवदर्शन के संदर्भ में देव शब्द से मुख्यतः पंचपरमेष्ठी को ग्रहण किया गया है यद्यपि इस क्षेत्र व काल में अरहंत परमात्मा के साक्षात दर्शन का सुयोग नही है, तथापि उनकी आदर्श रूप जिनप्रतिमा के दर्शन का सुयोग तो है ही। उनकी आदर्श रूप जिन प्रतिमा का लाभ भी अरिहंतवत् ही है। अरहंत परमात्मा की परमशांत मुद्रायुक्त जिन प्रतिमा ही भव्य जीवों के लिये आत्मानुभूति में निमित्त कारण हो सकती है, अतएव हमें नियमित देवदर्शन करना चाहिए।

जिनेन्द्र भक्ति एक अमोघ शक्ति मानी गई है जो दुर्गति के निवारण में समर्थ है,पुण्य का बंध कराने वाली है,एवं मुक्ति लक्ष्मी को प्राप्त कराने वाली है। पद्मपुराण पर्व 32 श्लोक 178–182

नियमित जब हम मंदिर में प्रवेश करते है, तो हमें क्या करना चाहिये मंदिर में स्थापित प्रतिमा को सबसे पहले हमारे नेत्र देख रहे होते है ,नेत्रों को हमारा मन देख रहा होता है ,मन को बुद्धि और बुद्धि को आत्मा देखती है, आत्मा को परमात्मा देख रहा होता है। यदि मंदिर में परमात्मा मिलने का कम जारी रखेगें तो हम आत्मा से गुजरते हुये परमात्मा तक पहुंच जायेगें। इस तरह मंदिर में गुजारे कुछ क्षण हमें चौबीस घंटे के लिये खुशी से भर देगें।

यहाँ दर्शन का अर्थ देखना नहीं है। यदि देवप्रतिमा, देवस्थान, देवपुरूष के दर्शन मात्र से किसी के पापों का क्षरण हो जाता, दुख दूर हो जाता, और पुण्य परमार्थ आदि मिल सके तो दिन रात प्रतिमाओं की परिचर्चा करने वाले पुजारियों, मंदिर की सफाई देखभाल करने वाले सेवकों को यह लाभ अनायास मिल जाते। उनके दुख दर्द दूर हो जाते। किन्तु मंदिर के सेवक पुजारी सामान्यजन की भांति सन्ताप सहते रहते है यद्यपि उनकी पूरी जिन्दगी देव प्रतिमा के सानिध्य एवं देवस्थान की सेवा में बीत जाती है।

दर्शन शब्द एक विशिष्ट अर्थ में आता है, दर्शन शब्द में स्तुति, वंदना, अर्चना, चितंन, मनन आदि गर्भित है। मात्र मूर्ति का अवलोकन करने से देवदर्शन की प्रक्रिया पूर्ण नही होती। मूर्ति तो मात्र निमित्त है। मूर्ति के माध्यम से परमात्मा के गुणों का स्मरण करके अपने निज स्वरूप को पहचानना आत्मावलोकन करना देवदर्शन का मुख्य प्रयोजन है।

देवदर्शन का मूल उद्देश्य विषय कषाय से बचना और आत्मानुभूति प्राप्त करता है। मूर्ति अवलोकन तो सभी कर लेते है परंतु आत्मानुभूति के बिना दुख दूर नहीं होता।

जिस प्रकार दवाखाने तक जाकर आ जाने से डॉक्टर को झुककर नमस्कार कर लेने से रोग नहीं मिटता, बल्कि डॉक्टर जो कहे उस पर अमल करने से रोग मिटता है। उसी प्रकार मंदिर में जाकर मूर्ति के सामने झुककर नमन करने से काम नहीं चलेगा, परंतु मूर्तिमान अरिहंत परमात्मा की परम ज्ञान मुद्रा के दर्शन का निमित्त पाकर सोचना चाहिए कि मैं भी ऐसा ही निर्विकारी परम स्वरूप शुद्व आत्मा हूँ, ऐसा विचार कर निजानुभूति करें तभी जन्म मरण का रोग मिट सकता है। इसलिए प्रथम भूमिका में मंगलमय स्त्रोतों पूजा पाठ का रहस्य समझने का प्रयत्न करना होगा, क्यूंकि सच्ची समझ के बिना यथार्थ भक्ति भी नहीं हो सकती।

मंदिर शांति व आत्मा के प्रतीक होते है। उनमें मनुष्य का मन पवित्र होता है। निर्विकार मूर्ति तत्वज्ञान के परिपूर्ण प्राचीन शास्त्र के दर्शन व अध्ययन से मनुष्यों के मन में शांति मिलती है।

मंगलमय पाँचों कल्याणक, मंगल जिनशासन उद्देश मंगलमय निर्वाणभूमि, मंगलमय अतिशय क्षेत्र विशेष ।। (पं. राजमल पवैया)

सिद्धोदय तीर्थ नेमावर (मध्य प्रदेश) में 18 मंदिरों का शिलान्यास एवं प्रमुख मंदिर के शिखर पर गुम्बद रखने का भव्य कार्यक्रम

श्रमण संस्कृति के महामहिम संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से नेमावर सिद्धक्षेत्र जहां से साढ़े पांच करोड़ मुनिराज मोक्ष गये हैं ऐसी अद्भुत वर्गणाओं से आच्छादित नर्मदा के किनारे करोड़ों रुपयों की लागत एवं नक्काशीदार लाल पत्थरों से बन रहे तीर्थ में निर्माणाधीन पंचबालयति मंदिर की गोल गुम्बद की स्थापना एवं त्रिकाल चौबीसी के बनने वाले 18 मंदिरों एवं भव्य संत सदन का शिलान्यास समारोह आचार्य श्री एवं ससंघ के सान्निध्य में देश के कोने-कोने से पधारे हजारों लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। भूमि पूजन, शिलारोपण का कार्यक्रम ब्र. श्री विनय भैया के निर्देशन में विधि-विधान के साथ सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर अपूर्व भक्ति एवं उल्लास के वातावरण में आचार्य श्री ने अपने संक्षिप्त आशीर्वाद देते हुए कहा कि इस अनश्वर तीर्थ का निर्माण जिन उदारमना लोगों के द्वारा अपनी नश्वर सम्पदा का त्याग कर किया जा रहा है उन सभी को मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद।

65 साल में पहली बार खण्डगिरि-उदयगिरि दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र पर पंचकल्याणक, वेदी प्रतिष्ठा और कलशा रोहण महोत्सव (02 जून, 2015 से 07 जून 2015)

बंधुओं,

सादर जय जिनेन्द्र।

जसरथ राजा के सुत कहे देश कलिंग पाचसो लहे
कोटिशिला मुनि कोटी प्रमाण वंदन करू जोड जुग पान।

हां बंधुओं, खण्डगिरि- उदयगिरि दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, भुवनेश्वर, ओडीशा में अतिप्राचीन (चतुर्थ कालीन), अति मनोज्ञ, मनोवांछित भगवान 1008 श्री आदिनाथ (कलिंग जिन) मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य आचार्यरत्न संतशिरोमणि प.पू.108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराजश्री के मंगल आशीर्वाद, मुनि पुंगव प.पू.108 मुनि सुधासागरजी महाराज के मार्गदर्शन पर एवं प.पू.ऐलक 105 श्री गोसलसागरजी महाराजजी के प्रेरणा से यह जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है तथा श्री आर.के.जैन (वास्तु तथा पुरातन शिल्पकलातज्ञ), मुंबई, बा. ब्र. प्रतिष्ठाचार्य प्रदीपजी एवं श्री महावीर प्रसाद जी जैन प्रतिष्ठाचार्य (राजस्थान) के मार्गदर्शन से चल रहा है। पहाड़पर स्थित पांच जिनालयों में से मुख्य जिनालय जो करीब 2200 साल प्राचीन है उसका जीर्णोद्धार करीब 90 प्रतिशत हो चुका है (केवल कलर काम एवं वेदी में स्वर्ण काम बाकी है)। उसका कलशारोहण, वेदी प्रतिष्ठा एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 02 जून से 07 जून के बीच होना निश्चित हुआ है।

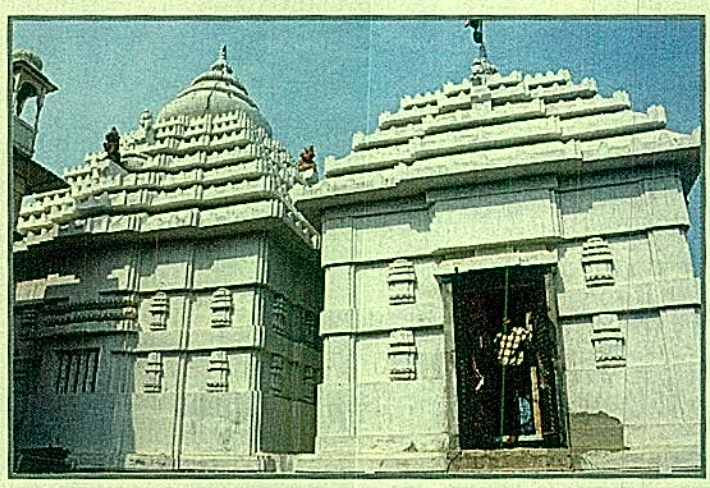

हमारी आपसे यह विनती है कि आप क्षेत्र पर महोत्सव में सहभागी एवं पात्र बनने हेतु निम्न दिये हुये नंबर पर संपर्क कर हमें अनुग्रहीत करें। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें- क्षेत्र मंत्री, श्री पवन कुमार बाकलीवाल (मो. 09437042974), श्री संतोष कुमार जैन (मो.09437313970), श्री सचिन कुमार शहा (मो. 07205041008), श्रीमती विनीता जैन (09438730773).

Website: jainkhandgiri.com, Email: khandagiriudaygirijain.com

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व.दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

नेमावर की झलकियाँ

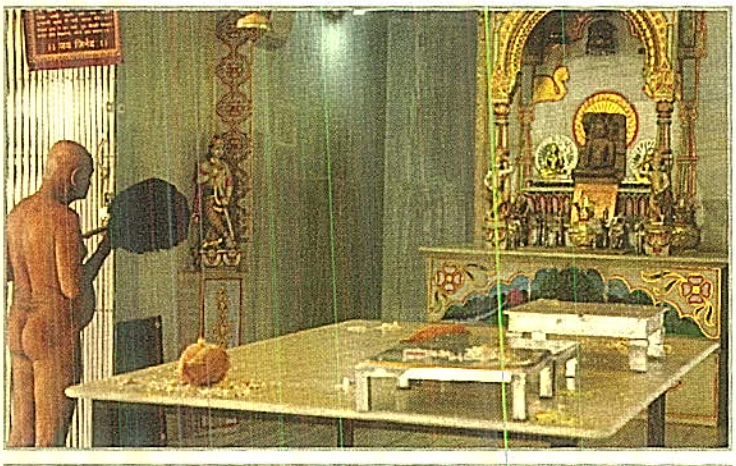

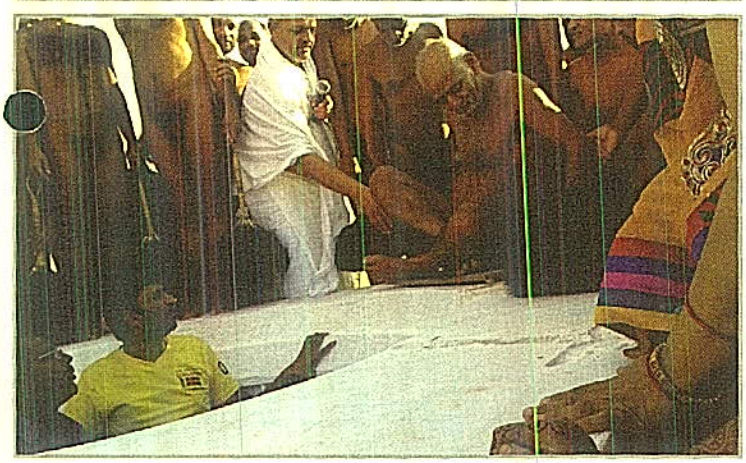

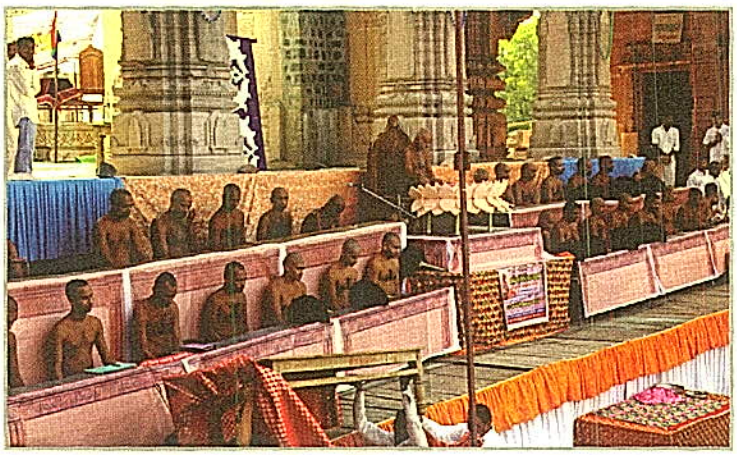

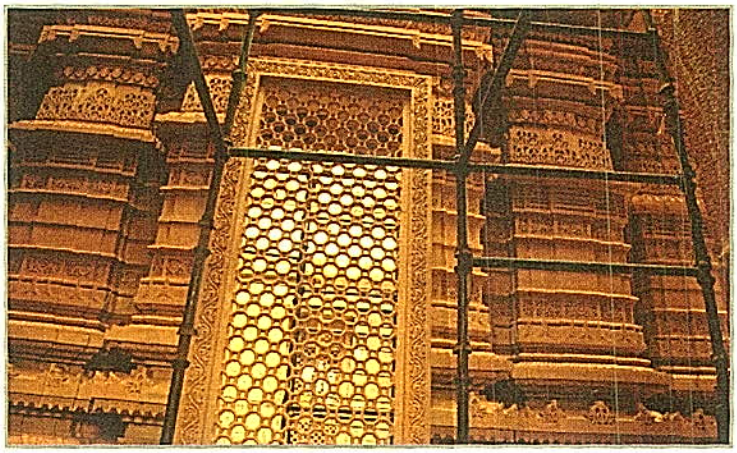

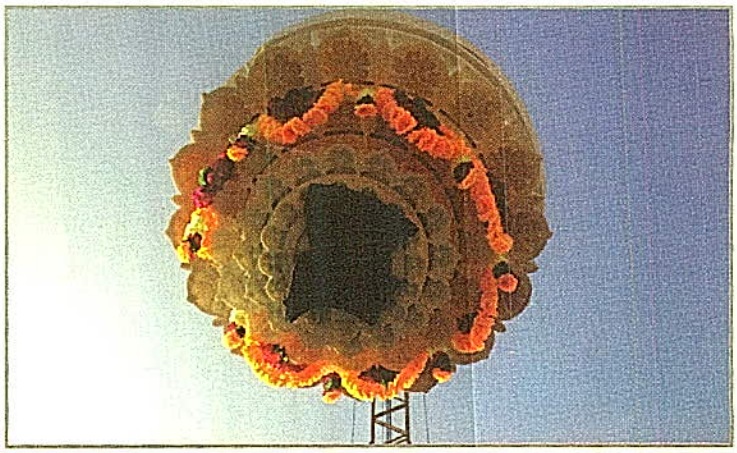

निर्मल धर्म, सम्यकत्व, संयम, तप और ज्ञान जैन धर्म में तीर्थ है (बोधपाहुड़ गा.27)

देवदर्शन का उद्देश्य उन मूर्तियों में अंकित भावों को अपने में लेकर उनके समान ही अपने को बनाना है। जो जैसा होना चाहता है, वह अपने सामने वैसा ही आदर्श रखता है। वैसे ही हमें भी आत्मा को समस्त कर्म बंधनों से छुडाकर अपने असली स्वरूप की प्राप्ति करना। मूर्ति के दर्शन मनुष्य के चंचल चित्त को लगाने के लिये आलम्बन है,उस आलम्बन को पाकर मनुष्य का चंचल चित्त क्षणभर के लिये उन महापुरूषों के गुणानुवाद में रम जाता है। जिन्होंने आत्मलाभ कर दुनिया के कल्याण की भावना से उस मार्ग को बतलाया। उनके गुणानुवाद करने से हमें स्वयं अपने गुणों का बोध होता। यह गुणानुवाद भगवान को प्रसन्न व नाराज करने हेतु नहीं किया जाता, यह तो हमें अपनी स्मृति कराकर बुरे कर्मों से बचाता है। जिन मंदिर में जाकर देवदर्शन करना प्रत्येक श्रावक श्राविका का नित्य कर्त्तव्य है। यह कर्त्तव्य भाव पूर्वक हों, तो निश्चित फलदायक होती है जैसा कि कल्याण मंदिर स्तोत्र में कहा भी है–

'आकर्णितोपि महितोपि निरीक्षितोपि
नूनं न चेतसि मया विर्धतोसि भक्त्या।
जातोस्मि तेन जनबान्धव !दुःखपात्रं
यस्मात् क्रिया प्रतिफलन्ति न भावशून्याः।।

हे जनबंधु! आपका उपदेश सुनकर भी, पूजा करके भी और बारम्बार देखकर भी, अवश्य ही मैंने भक्तिपूर्वक आपको अपने ह्रदय में स्थापित नहीं किया। इसी से मैं दुःखों का पात्र बना क्योंकि भावशून्य क्रिया कभी भी फलदायी नहीं होती ।

अतः शरीर व वचन के साथ मन से भी सभी क्रियाएँ होना आवश्यक है। प्रतिदिन प्रातःकाल यह सब इसलिए भी आवश्यक है, कि मनुष्य अर्थ और काम के पचडे में पडकर अपने सर्वोच्च लक्ष्य को भूल ना जाए। भगवान का गुणानुवाद करके अपनी श्रद्धा अर्पित कर सके और शांति तथा विरागता के उस दर्शन में अपनी कलुषित आत्मा का प्रतिबिम्ब देखकर उसे परिमार्जित करने का प्रयत्न कर सके।

दर्शन श्री देवाधिदेव का दर्शन पाप विनाशन है
दर्शन है सोपान स्वर्ग का और मोक्ष का साधन है।
वीतराग मुख के दर्शन की पद्मराग सम शांतप्रभा
जन्म जन्म के पातक क्षण में दर्शन से हो शांत विदा।
दर्शन श्री जिनदेव सूर्य संसार तिमिर का करता नाश
बोधप्रदाता चित्तपद्म को सकल अर्थ का करे प्रकाश ।

जैन तीर्थवंदना के सम्पादक डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती' को पितृशोक

जैन जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो. रमेशचन्द जैन (श्रवणबेलगोला), प्रो. अशोककुमार जैन (वाराणसी), डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन (श्रवणबेलगोला), डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन (सनावद), डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती' (सम्पादक– जैन तीर्थवंदना, पार्श्व ज्योति, बुरहानपुर),श्रीमती अंगूरी जैन एवं सिं.वीरेन्द्रकुमार जैन सोंरया (मड़ावरा) के पूज्य पिता श्रीमान् सिंघई शिखरचन्द जैन सोंरया का दि. 9 फरवरी, 2015 को प्रातः 9 बजे झाँसी में समाधिभावना पूर्वक णमोकार मंत्र श्रवण करते हुए 89 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने दि. 7 फरवरी, 2015 को सायंकाल ही जीवनपर्यन्त अन्न–जल का त्याग कर दिया था तथा वस्त्र त्याग की भावना व्यक्त की थी। उनका पूरा जीवन सादगीमय, धर्मनिष्ठ सत्यभाषी, स्वाध्यायशील, गुरुभक्ति का रहा। अपने जीवन के लगभग 65 अंतिम वर्षों में उन्होंने कभी भी अन्न–जल आदि रात्रि में ग्रहण नहीं किया। प्रतिदिन प्रातः देवपूजन, रात्रि में वचनिका उनका नियम था। वे प्रत्येक सायंकाल आलोचना पाठ, बारहभावना, समाधिमरण पाठ किया करते थे। उन्हें अनेक आध्यात्मिक भजन मुखाग्र थे। श्री दि.जैन नया मन्दिर, मड़ावरा के शास्त्र भण्डार के प्रायः सभी ग्रन्थों का उन्होंने वाचन किया था। वे अपने नगर मड़ावरा के वयोवृद्ध गौरव–पुरुष थे।

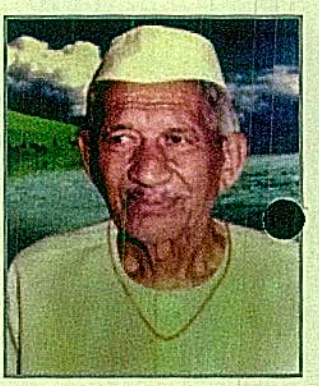

उनके निधान पर भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सवाई सिंघई सुधीर जैन, कुण्डलपुर कमेटी के अध्यक्ष सिं. सन्तोषकुमार जैन, ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र कमेटी, नारेली के अध्यक्ष–श्री निहालचन्द पहाड़िया, समाजसेवी– श्री ज्ञानेन्द्र गदिया (सूरत), अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष– डॉ. जयकुमार जैन, अ.भा.दि.जैन शास्त्रि परिषद् के अध्यक्ष– डॉ. श्रेयांसकुमार जैन, मड़ावरा जैन समाज की ओर से सिं. सुखानन्द जैन, डॉ. शिखरचन्द जैन, श्री महावीर दि.जैन संस्कृत विद्यालय, साढूमल की ओर से सिं. श्रीनन्दनलाल जैन आदि सैकड़ों श्रीमन्तों, विद्वानों ने श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए उनके कीर्तिमय जीवन की प्रशंसा की। 'तीर्थवंदना' परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

तीर्थक्षेत्र पारसनाथ के लिये करोड़ों की योजनाएँ स्वीकृत

झारखण्ड सरकार एवं केन्द्रीय सरकार ने जैनियों के विश्वविख्यात तीर्थ श्री सम्मेदशिखर जी पारसनाथ में अनेक योजनाओं का डी.पी.आर. बनकर तैयार है तथा अनेक योजनाओं को लिए जाने के लिए कार्य प्रगति पर है। जिन योजनाओं का डीपीआर बनकर तैयार है तथा जिन पर शीघ्र ही कार्य प्रारम्भ होगा उसकी विवरणी नीचे है :-

	विवरण	प्राक्कलित राशि (करोड़ में)
1.	वंदना पथ का उच्चस्तरीय निर्माण	3,41,74,000
2.	टूरिज्म रिस्पशन सेंटर एवं डोली वालों के लिए सेन्टर	3,91,70,900
3.	मधुबन में पार्किंग फेस्लिटी के विकास हेतु	1,96,49,900

श्री समन्वय समिति के प्रमुख एवं श्री सेवायतन के निर्देशक श्री एम.पी.अजमेरा के लगातार प्रयास से इन योजनाओं के प्राक्कलन सरकार [illegible] बनाए गए हैं जो अत्यन्त ही प्रशंसनीय है।

इसके अलावा श्री एम.पी.अजमेरा ने हाल ही में प्रधान सचिव, पर्यटन विभाग, झारखण्ड सरकार को पत्र लिखकर एक कार्य योजना बनाने के लिए पत्र भेजा है और सरकार से यह अनुरोध किया गया है कि वे पर्यटन विभाग द्वारा इन कार्यों को शीघ्र करावें ताकि पूरे विश्व का जैन समाज, झारखण्ड सरकार के प्रति एक आदर्श भावना बना सकें।

1. **सिवरेज सिस्टम :** मधुबन पारसनाथ में सिवरेज की व्यवस्था नहीं है जिसकी नितांत आवश्यकता है अत: इसकी व्यवस्था हेतु एक प्राक्कलन तैयार किया जाय और राशि की व्यवस्था कर पर्यटन विभाग द्वारा इस महत्वपूर्ण कार्य को कराने की दिशा में पहल की जाये। यह बहुत ही आवश्यक है।

2. **तीर्थंकर पार्क :** तत्कालीन सचिव पर्यटन विभाग श्री अरुण कुमार सिंह जी ने तीर्थंकर पार्क की योजना बनाई थी और इस हेतु जैन समाज ने आवश्यक भूमि भी उपलब्ध कराई थी परन्तु उनके स्थानांतरण के पश्चात [illegible]कर पार्क की योजना कागजातों तक की सीमित रह गई। श्री अजमेरा ने लिखा है कि तत्संबंधी संचिका का अवलोकन कर उस पर अग्रतर कार्रवाई करें, ताकि एक समय सीमा में इस महत्ती योजना को मूर्तरूप दिया जा सके।

3. **मधुबन पथ का सौंदर्यीकरण :** मधुबन मोड़ से तलहटी तक सड़क के दोनों किनारे सौंदर्यीकरण की योजना भी लंबित है। इस योजना का भी किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इस हेतु सक्षम संस्थान वन एवं पर्यावरण विभाग के अधिकारियों से विमर्श कर अति आकर्षक योजना बनायी जाय।

4. **पर्यटन विभाग प्रदर्शनी एवं कार्यालय :** यहां पर पर्यटन विभाग को कोई भी कार्यालय अथवा प्रदर्शनी हेतु कोई व्यवस्था नहीं है जबकि विश्व के जैनियों के सबसे बड़े तीर्थ पर पर्यटन विभाग का कार्यालय अति आवश्यक है। इस पर भी कार्रवाई आवश्यक है।

5. **रोप-वे :** यह तीर्थ अहिंसा, शाकाहार, मांस-मदिरा से रहित पावन तीर्थ है जिसकी महत्ता तीर्थ स्थल से है मात्र पर्यटन स्थल से नहीं। पहाड़ पर वंदना करने वाले लोग नंगे पांव जाते हैं और यथासंभव किसी भी प्रकार का

सेवन भी नहीं करते और अगर रोप-वे बन जाता है तो पावनता नष्ट हो जाने की व्यापक संभावना है। इसके अतिरिक्त हजारों डोली चालक जो डोली के माध्यम से अपनी जीविका उपार्जन करते हैं उन पर भी संकट आ जायेगा। अत: यहां पर रोप-वे का होना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। राज्य सरकार अथवा केन्द्रीय सरकार ने ऐसा कोई निर्णय लिया हो तो उसे अविलम्ब रद्द किया जाय जो व्यापक जनहित में और तीर्थ की पावनता के हित में आवश्यक होगा।

6. **पर्यटन भवन :** पर्यटन विभाग द्वारा पर्यटन भवन को बनाने में काफी राशि व्यय की गई है लेकिन अभी भी वहां पर बहुत सा काम बाकी है जिसके कारण ये भवन खंडहर के रूप में देखा जा रहा है जिस पर ध्यान आकृष्ट किया जा रहा है जिस पर अवश्य ही ध्यान दिया जाय।

7. **परिवहन की व्यवस्था :** रांची से मधुबन पारसनाथ/धनबाद से मधुबन पारसनाथ तथा गिरिडीह और इसरी से पारसनाथ हेतु परिवहन बस की व्यवस्था अगर पर्यटन विभाग करे तो काफी लाभप्रद होगा। इससे तीर्थ यात्रियों को काफी सुविधा मिलेगी। इसरी स्थित पारसनाथ स्टेशन से यात्रियों के हित में पारसनाथ तक रिंग बस सर्विस हो जाने से काफी लाभ होगा।

8. **बैठक का आयोजन :** पर्यटन विभाग द्वारा एक बैठक मधुन में आहूत की जाय जिससे संबंधित सरकारी पदाधिकारियों के अतिरिक्त समन्वय समिति से जुड़े महत्वपूर्ण लोगों को भी आमंत्रित करें ताकि सम्यक विचार विमर्शोपरांत आवश्यकता को समझते हुए इस महत्वपूर्ण स्थल के विकास में पर्यटन विभाग अन्य महत्वपूर्ण निर्णय भी ले सके। श्री एम.के.चौधरी तत्कालीन प्रधान सचिव पर्यटन विभाग ने पूर्व में पारसनाथ में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की थी।

कन्हैयालाल सेठी — अध्यक्ष
ज्ञानचन्द जैन — महामंत्री
पूर्वांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी

ईडर (साबरकांठा) गुजरात में श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से मूर्तियों एवं उपकरणों की चोरी

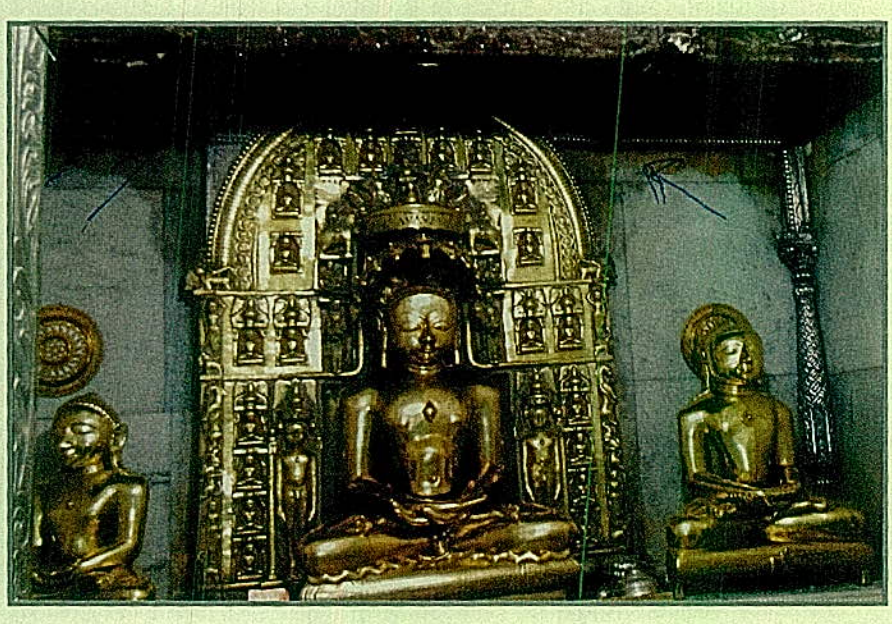

आये दिन मूर्तियों की चोरी की घटनाओं में हो रही वृद्धि से समाज में रोष एवं क्षोभ का वातावरण व्याप्त है। ऐसी ही एक घटना 500 साल पुराना श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ईडर (साबरकांठा) गुजरात में दिनांक 24 जनवरी, 2015 की रात्रि में हुई है जिसमें चोरों ने छत के ऊपर से लोहे की जाली को लांघ करके मंदिर जी के ताले को तोड़कर मूर्तियों एवं लाखों रुपयों की चांदी के नकशी काम किये उपकरणों को उठा ले गये हैं। इसके 4 दिन पहले श्री 1008 शीतलनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर में भी ताला तोड़कर चोरी करने का प्रयास किया गया था जो निष्फल हो गया। हमारे मंदिर के पास पुलिस चौकी होने के बावजूद भी चोरों ने मूर्तियों एवं उपकरणों की चोरी की है। घटना की एफ.आई.आर. दर्ज की गई है तथा स्थानीय समिति की ओर से श्रीमती आनंदीबेन पटेल साहिबा, मुख्यमंत्री - गुजरात सरकार को पत्र लिखकर घटना की जांच कराने की मांग की है।

- अश्विन पूनमचंद गांधी, ईडर

चलो सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी

चलो सिद्धक्षेत्र मांगी तुंगी के, दर्शन करके आवे।
और अपने भावों में कुछ निर्मलता ले आवे।।
ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से बनी,
भ. ऋषभदेव की प्रतिमा देखकर के आवे।
विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है यह,
उनके चरणों में दर्शन करके आवे।।
चलो ..... ।।
धन हो गयी माटी यहाँ की, दूर-दूर से यात्री आवे।
निन्नाणवे करोड़ महा मुनि मोक्ष गये, ऐसी पवित्र भूमि पर जाकर आवे।।
आवागमन की है सुविधा, विशाल धर्मशाला में ठहर कर आवे।
ऊँचे पहाड़ है मांगी तुंगी, चलो वंदना करके आवे।।
'उत्सव जैन' कहता प्यारे, चलो भ. ऋषभदेव का अभिषेक करके आवे।
अपनी चंचल लक्ष्मी का उपयोग, ऐसे पावन तीर्थ पर करके आवे।।
चलो सिद्धक्षेत्र मांगी तुंगी के, दर्शन करे आवे।
और अपने भावों में कुछ निर्मलता ले आवे।।

- उत्सव जैन,
नौगामा (बांसवाड़ा) राज.

23/02/2015

श्रीमान् सुधीर जैन साहब जी
अध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
तरास ज्वेलर्स, सुभाष चौक,
कटनी - 482 501 (मध्य प्रदेश).

श्रीमान् सुधीर जैन साहब जी, जय जिनेन्द्र।
सेवा में निवेदन है कि आज मैंने अपने आदमी से आपका लेख अध्यक्ष की कलम से जो जैन तीर्थ वंदना फरवरी, 2015 पृष्ठ 3 पर छपा है पढ़वाया, धन्यवाद।
आपका लेख ऐसा है जो कि पढ़ने वाला और सुनने वाला दोनों की सोई हुई आत्मा को जगाता है और यह सोच और शक्ति देता है कि मुझे भी जैन तीर्थक्षेत्रों के लिए कुछ न कुछ जरूर करना चाहिए। और कुछ नहीं तो कम से कम नंगे पाँव जाकर जैन तीर्थ दर्शन ही करूँ।
मैं सोचता हूं कि हर जैन को तीर्थक्षेत्रों के लिए तन, मन और धन से लग जाना चाहिए।

धन्यवाद

आपका
शिखरचन्द जैन
के-106, हौज खास एन्क्लेव, नई दिल्ली- 110 016

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

मुनिश्री क्षमासागर की समाधि सम्पन्न

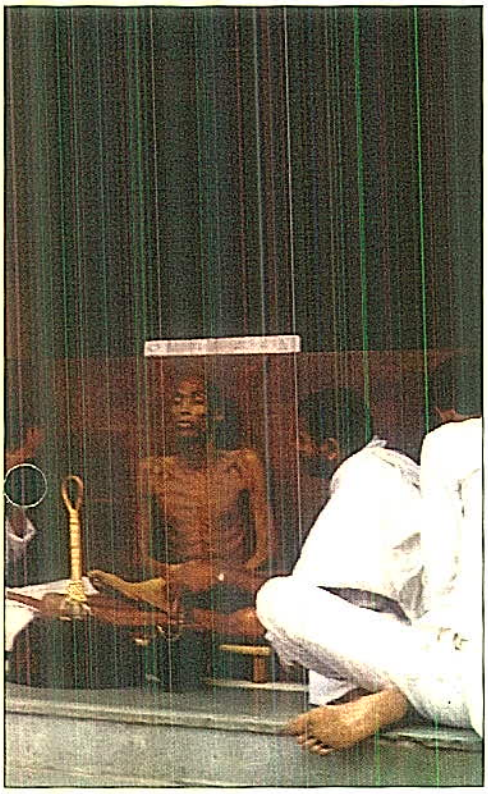

सागर। आचार्य प्रवर श्री विद्यासागरजी के प्रभावक शिष्य श्री क्षमासागरजी की समाधि 13 मार्च, 2015 को वर्णी भवन, मोराजी, सागर में मुनिश्री भव्यसागरजी के सान्निध्य में प्रातः 5.10 पर हुई। पर्याय परिवर्तन के उपरांत दाह संस्कार भाग्योदय तीर्थ में गौशाला जनसमुदाय के बीच सम्पन्न हुआ। अंतिम यात्रा में तीस हजार से अधिक धर्म प्रेमी बन्धु सम्मिलित हुये। यह विशाल यात्रा इतिहास की वस्तु बनी।

मुनिश्री आचार्यश्री के संघ में वर्तमान युग के, प्रथम श्रेष्ठ व्यवहारिक योग्यता एम.टेक. धारी शिष्य थे। नैनागिर में अल्प आयु में ऐलक दीक्षा ग्रहण की फिर मुनि बने। शिक्षा के उन्नयन विशेषकर व्यवसायिक शिक्षा में, उनका सकारात्मक चिंतन, विद्यार्थियों के आकर्षण का केन्द्र बनी। पिछले 10 वर्ष से वाणी पर विराम, अस्वस्थता के कारण था, किन्तु उनके हजारों समर्पित शिष्य चातुर्मास स्थापना दिवस पर इकट्ठे होकर अपनी श्रद्धा समर्पित करते थे। उनके वाणी-टेप विदेशों में भी शिक्षा आधार है।

वर्ष 2014 का चातुर्मास स्थापना, वर्णीजी की तपस्थली, शांति निकुंज उदासीन आश्रम सागर में हुआ। दर्शन को पधारे, समारोह के भागीदारों में जयपुर, जोधपुर, मुंबई, दिल्ली के अलावा, अमेरिका, एवं जर्मनी से भी उनके प्रतिभाशाली शिष्य पधारे। वह सब उनकी उपस्थिति में पूर्व के ओजस्वी प्रवचन टेप सुनकर अपने को उपकृत समझते रहे।

- डॉ. पी.सी.जैन,

मंत्री- श्री दिगम्बर जैन शांति निकुंज उदासीन आश्रम, सागर

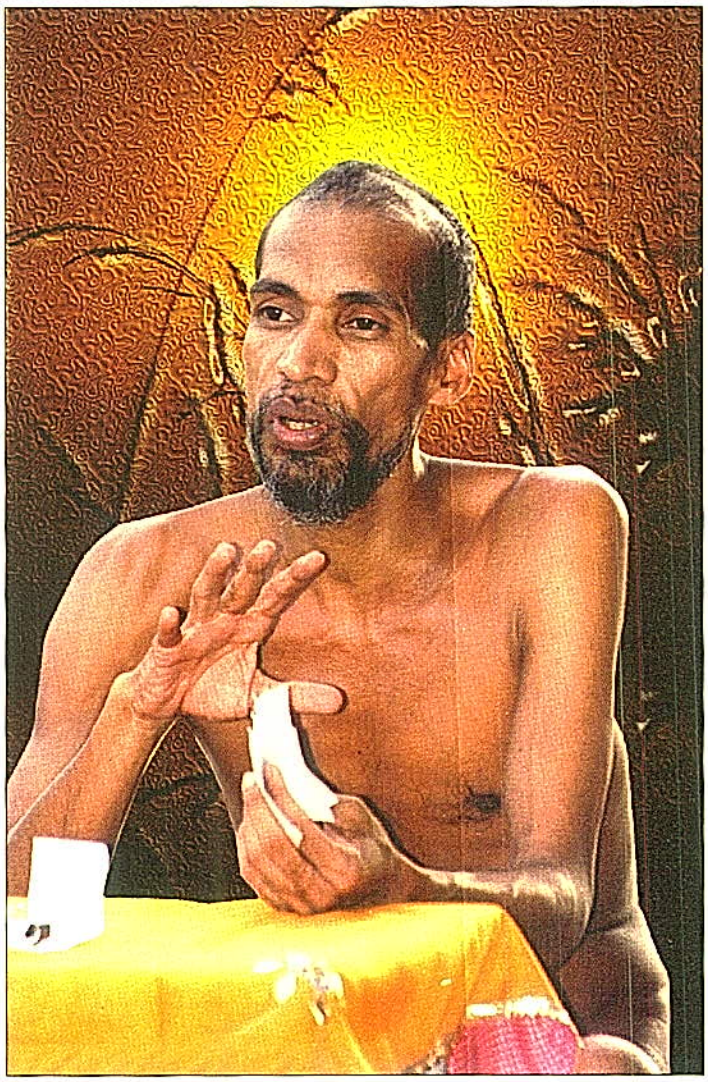

समाज को शिक्षा का महत्व बताने वाले
नयी पीढ़ी को जैन धर्म का सही-सरल अर्थ
उन्हीं की भाषा में समझाने वाले,
उत्कृष्ट साहित्य और कविता के माध्यम से
आत्मधर्म को जैन दर्शन से पिरोने वाले,
आत्म प्रशंसा से कभी प्रसन्न न होने वाले,
सही अर्थों में वात्सल्य मूर्ति श्री क्षमासागरजी
मुनिराज के चरणों में -

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार
का कोटि-कोटि नमन् !

तीर्थ दो प्रकार के हैं - द्रव्य तीर्थ (सम्मेदशिखर, चम्पापुरी, पावापुरी आदि) और भावतीर्थ (सम्यग्ज्ञान, सम्यक तप, संयम आदि) (मूलाचार, गा. 560)

हमारे नये बने सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

Smt. Vaibhavi Dilipkumar Doshi, Mumbai

Shri Amish Dilip Doshi, Mumbai

Smt. Nidhi Amish Doshi, Mumbai

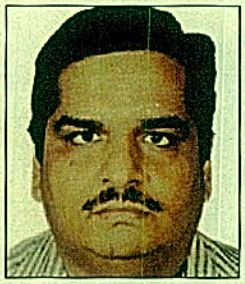
Shri Kamal Shantilal Kasliwal, Mumbai

Dr. Mahavir Anantdas Soitkar, Chandrapur

Shri Bireshchandra Chamanlal Jain, Chandrapur

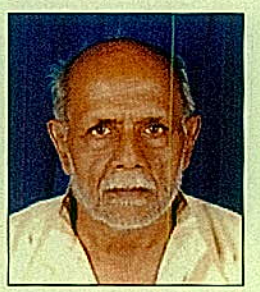
Shri Ashish Kumar Abhay kumar Jain, Amarpatan

Shri Vikas Shantkumar Jain, Jaitwara

Smt. Rachana Sohanlal Patni, Nagpur

Shri Satish Sundarlal Pendhari(Jain), Nagpur

Shri D. Jeeva Advocate, Alandur

Shri S. Appandai, Mangalu

Shri Jeevagan Chinnadurai Jain, Vandavasi

Shri Gambiram Appandarajan, Chennai

Shri Rajendra Prasad P. Jain, Chennai

Shri Praveen Fulchand Kala, Aurangabad

Shri Bahubali Tarachand Gangwal, Aurangabad

Smt. Dr. Usha Ramesh Badjatya, Aurangabad

Shri Santosh Shantilal Bakliwal, Ambad

Shri Vishal Rajkumar Kala Ambad

Shri Savan Umeshkumarji Chudiwal Aurangabad

Shri Tilokchand Shivlal Pande Pachod

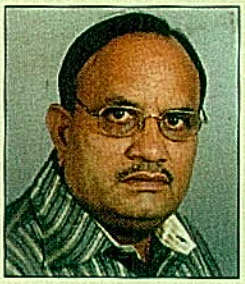
Shri Kushal Tarachandji Bakliwal, Khategaon

Shri Kamlesh Manekchandji Sethi, Aurangabad

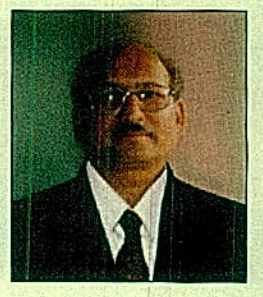
Shri Anil Dharamchadji Chudiwal, Shrirampur

सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है।

आजीवन सदस्य

Shri Shrenik Vinod Kasliwal, Aurangabad

Shri Kailashchand Hiralal Kasliwal, Aurangabad

Shri Prakash Bhikchand Thole, Aurangabad

Shri Hiralal Dhanulal Patni, Phulambri

Shri Ravindrakumar Nihalchand Sethi, Aurangabad

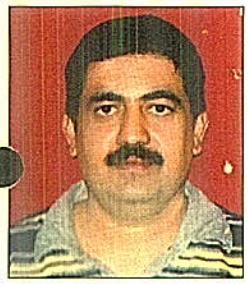
Shri Prasanna Prakashchand Kala, Aurangabad

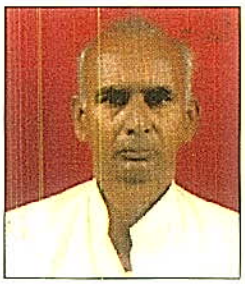
Shri Vardhman Rupchand Patni, Fulambri

Sou. Pratibha Abhaykumar Kasliwal, Aurangabad

Shri Shital Premchand Patni, Aurangabad

Sou. Kashmira Anil Chandiwal, Aurangabad

Shri Ansul Anil Chandiwal, Aurangabad

Shri Pawan Babulal Pande, Nashik

Shri Dinesh Subhash Jain, Malegaon

Shri Shailesh Hukumchand Thole, Nashik

Shri Dilip Kumar Gulabchand Patni, Nanded

Sou. Sunanda Dilipkumar Patni, Nanded

Shri Shripal Khushalchand Pahade, Kopergaon

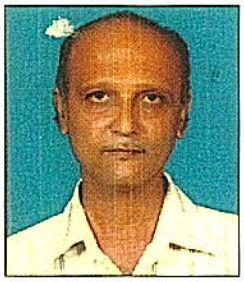
Shri Nitin Madanlal Kasliwal, Kopergaon

Smt. Pooja Paras Mehta, Mumbai

Smt. Kevana Abhishek Paronigar, Mumbai

Shri Sushilkumar Bhimsain Jain, Bangalore

Shri Sanjay Prithviraj Tholiya, Pondicheri

Shri Sujit Rajkumar Doshi, Pune

Shri Ranjan kumar Premchand Singhai, New Delhi

Smt. Chetnaben Dilip Doshi, Mumbai

जिन लोगों ने तप करके शक्ति और सिद्धि प्राप्त कर ली है, वे मृत्यु को जीतने में भी सफल हो सकते हैं (तिरुवल्लूर)

आजीवन सदस्य

Sou. Ruchita Santosh Patni, Aurangabad

Shri Pramod Kumar Hukamchand Sethi, Aurangabad

Shri Shailesh Nemichand Kasliwal, Aurangabad

Shri Dinesh Bhagchand Sethi, Aurangabad

Shri Manoj Rameshchand Kasliwal, Waluj Gaon

Shri Neeraj Hukumchand Badjatye, Aurangabad

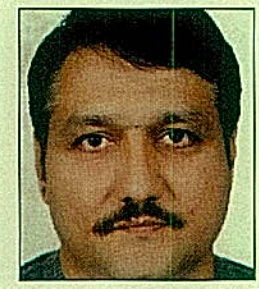
Shri Jitendra Vijaykumarji Patni, Aurangabad

Sou. Archana Jitendra Patni, Aurangabad

Shri Dharm Kumar Deepchand Gangwal, Bagpimpalgaon

Shri Pawankumar Fulchand Jhanjhari(Jain), Parbhani

Shri Sunil Nemichnd Thole, Aurangabad

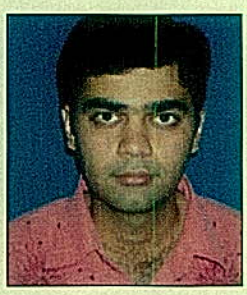
Shri Nilesh Prakashchand Badjatye, Aurangabad

Shri Anil Hukumchand Thole, Aurangabad

Shri Jitendra Kumar Zumberlal Pahade, Aurangabad

Shri Anil Nemichand Kala, Aurangabad

Shri Dhiraj Dharmchand Patni, Aurangabad

Shri Nilesh Manikchand Gangwal, Aurangabad

Shri Sachinkumar Prakashchand Kasliwal, Aurangabad

Shri Abhijit Vijaykumar Jain, Aurangabad

Shri Chandrashekhar Ashokkumar Gangwal, Aurangabad

Shri Suresh Fulchand Pahade, Kannad

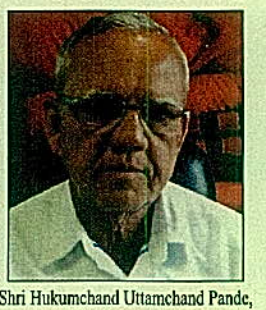
Shri Hukumchand Uttamchand Pande, Kannad

Shri Santosh Mannulal Thole, Kannad

Shri Dilip Kumar Ramanlal Bakliwal, Aurangabad

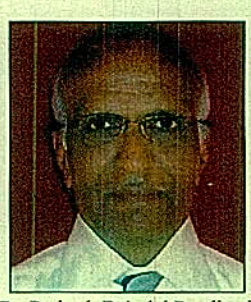
Dr. Prakash Babulal Papdiwal, Aurangabad

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है।

आजीवन सदस्य

Ku. Rachana Rameshchand Chudiwal, Aurangabad

Sou. Shobha Suresh Kasliwal, Aurangabad

Sou. Preeti Suraj Jain (Pendhari), Aurangabad

Shri Ravindra Ratanlal Patni, Aurangabad

Shri Surajmal Bhauralal Patni, Aurangabad

Ku. Mayuri Ajay Patney, Aurangabad

Mayur Arunkumar Patney, Aurangabad

Shri Bharat Chandmal Patney, Aurangabad

Shri Vishal Chandmal Patni, Aurangabad

Shri Bharat Kumar Vijaykumar Tholia, Aurangabad

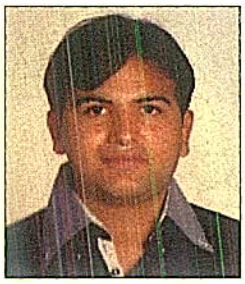
Shri Aadesh Rajkumar Gangwal, Aurangabad

Shri Ajay Kesarimal Patni, Aurangabad

Shri Madanlal Hiralal Kasliwal, Aurangabad

Sou. Rakhi Komal kumar Lohade, Aurangabad

Shri Ravi Kumar Kailashchand Pahade, Aurangabad

Shri Sudesh Ramanlal Chudiwal, Aurangabad

Shri Naveen Jaikumar Bohra, Aurangabad

Shri Nitin Subhashchand Bohra, Aurangabad

Shri Uday Shantilal Bakliwal, Aurangabad

Shri Neelesh Kastoorchand Patni, Aurangabad

Shri Prakash Shantilalji Kasliwal, Aurangabad

Shri Sunil Ramanlal Gangwal, Aurangabad

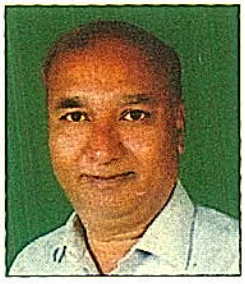
Shri Dilip Abhayraj Thole, Aurangabad

Shri Rajesh Amarchand Kala, Garkheda

Sou. Monali Sachin Patni, Aurangabad

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं ।

।।श्री ऋषभदेवाय नमः।।

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी (नासिक) महाराष्ट्र में

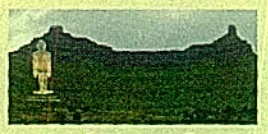

अखण्ड पाषाण में बनने वाली विश्व की सबसे ऊँची दिगम्बर जैन प्रतिमा

108 फुट विशालकाय भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव

-पंचकल्याणक-
11 से 17 फरवरी 2016

Highest Jain Idol In World
The Statue of Ahimsa

-मस्तकाभिषेक-
18 फरवरी से प्रारंभ

गुरुणांगुरु चारित्रचक्रवर्ती
प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

-मूर्ति निर्माण की प्रेरणास्रोत-
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

-मार्गदर्शन-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका
श्री चंदनामती माताजी

-अध्यक्ष एवं कुशल नेतृत्व-
कर्मयोगी पीठाधीश
स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

विश्व के ऐतिहासिक पंचकल्याणक एवं महामस्तकाभिषेक में भाग लेने का स्वर्णिम अवसर

इन्द्र-इन्द्राणी की न्यौछावर राशि
108 इन्द्र-इन्द्राणी
1,00,000/-रुपये
1008 इन्द्र-इन्द्राणी
51,000/-रुपये
(प्रत्येक जोड़ा)

महामस्तकाभिषेक की न्यौछावर राशि		
कलश का नाम	न्यौछावर राशि	सदस्य
1. रत्न कलश	1,00,000/-रु.	7
2. स्वर्ण कलश	51,000/-रु.	5
3. रजत कलश	25,000/-रु.	4
4. भक्ति कलश	11,000/-रु.	3
5. श्रद्धा कलश	5,100/-रु.	2

प्रथम, द्वितीय, तृतीय विशेष कलश एवं पंचामृत अभिषेक के कलशों के लिए निम्न फोन नं. पर संपर्क करें।

न्यौछावर राशि जमा करने हेतु- खाते का नाम-B.R.P.P.M. Samiti Mangitungi
बैंक-P.N.B., A/c-3704002100007589 (IFSC Code-PUNB0370400), शाखा-हस्तिनापुर
नोट - राशि जमा करने के उपरांत निम्न नम्बर पर पूर्ण जानकारी अवश्य देवें।

-समिति द्वारा विशेष-

(1) सभी इन्द्र-इन्द्राणियों के लिए इसी राशि में मस्तकाभिषेक का अवसर तथा आवास, पूजन सामग्री, पूजन वस्त्र, भोजन आदि व्यवस्था। (2) 51000/-रुपये अथवा इससे अधिक के सभी दातारों के रंगीन चित्रों से युक्त आमंत्रण पत्रिका व मूर्ति निर्माण का ऐतिहासिक ग्रंथ प्रकाशन करने की योजना। ग्रंथ सभी दातारों को भेंट भी किया जायेगा। स्वीकृति के साथ अपना फोटो भी हस्तिनापुर भेजें। (3) महामस्तकाभिषेक 18 फरवरी से प्रारंभ होगा। आपको अभिषेक किस तिथि में करना है, इसकी सूचना कार्यालय द्वारा 3 माह पूर्व आपको भेजी जायेगी। (4) सौधर्म इन्द्र, धनकुबेर, यज्ञनायक, ईशान, सानत कुमार, माहेन्द्र आदि प्रमुख इन्द्र की जानकारी हेतु निम्न नम्बरों पर संपर्क करें। (5) महोत्सव के मध्य साधुओं, भट्टारकों, विद्वानों, महिलाओं, युवाओं व राष्ट्रीय समितियों के अधिवेशन भी होंगे।

"हजारों हजार वर्ष के लिए बनने वाले इस स्वर्णिम इतिहास के आप स्वयं साक्षी बनें तथा इस महामहोत्सव में भाग लेकर महान पुण्यार्जन करें।"

पूज्य माताजी के मंगल प्रवचन एवं महोत्सव की समस्त जानकारी प्रतिदिन देखें

जिनवाणी चैनल पर प्रतिदिन	पारस चैनल पर प्रतिदिन	कलश चैनल पर प्रतिदिन
दोपहर 3.30 बजे	रात्रि 9 बजे एवं प्रातः 6 बजे	दोपहर 4 बजे

नोट - राष्ट्रीय, प्रांतीय एवं विभिन्न समितियों का गठन किया जा रहा है। आगामी पत्रिकाओं व फोल्डर आदि में शेष जानकारियाँ व समितियों के नाम आदि प्रकाशित किये जायेंगे।

निवेदक

अध्यक्ष
कर्मयोगी पीठाधीश
स्वस्तिश्री
रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी,
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

महामंत्री
डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल
पैठण (महा.)

उपाध्यक्ष
महावीर प्रसाद जैन
बंगाली स्वीट्स, दिल्ली
कमलचंद जैन
खारीबावली, दिल्ली

कार्याध्यक्ष
अनिल कुमार जैन
कमल मंदिर,
प्रीतविहार, दिल्ली

कोषाध्यक्ष
प्रमोद कुमार कासलीवाल
औरंगाबाद (महा.)

मंत्री
इंजी. सी. आर. पाटील, पुणे
संजय पापड़ीवाल, औरंगाबाद
विजय कुमार जैन, जम्बूद्वीप
जीवन प्रकाश जैन, जम्बूद्वीप

महामस्तकाभिषेक एवं स्वयंसेवक समिति अध्यक्ष
प्रो. डी. ए. पाटिल
जयसिंहपुर (महा.)

108 फुट विशालकाय भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति, पो.-मांगीतुंगी (नासिक) महा.

अध्यक्ष कार्यालय-दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, पो.-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404

संपर्क हेतु फोन नं.-मो.-09411025124, 09717331008, 09457817324, 09403688133, 01233-280184 (कार्यालय हस्तिनापुर), 02555-286523 (कार्यालय-मांगीतुंगी)

Website : www.highestjainidolinworld.com www.encyclopediaofjainism.com E-mail : badimurtimangitungi@gmail.com Facebook : jaintirthjambudweep

सभी जिनेश्वर दर्शन, ज्ञान और चारित्र से युक्त है। इन तीन कारणों से युक्त हैं इसलिए वे भाव से तीर्थ हैं (मूलाचार गा.562)